7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 कैंट थाने की पुलिस ने थामे तेज रफ्तार दौड़ रहे डंपर के पहिए, सीज किया– जुर्माना भी लगाया

5 मुलायम सिंह यादव का वो पैंतरा...

8 विराट 10वीं बार लीग में किसी गेंदबाज के पहले शिकार बने

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 37 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 08 अप्रैल, 2024

पीलीभीत में 'गांधी युग' पीछे छूटा, नए अध्याय की ओर राजनीति..
35 साल में पहली बार न मेनका न वरुण मैदान में... क्यों

पीलीभीत। सुनिए भाई साहब... यह पीलीभीत है। इसने अलग भाषा–संस्कृति वाले उत्तराखंड–नेपाल की सीमाओं को जोड़ा है। जल–जंगल की विविधता को प्राकृतिक सौंदर्य में पिरोया है। यह अपनाना–निभाना जनता को है और समय के साथ चलना भी। असम चौराहा पर फल के ठेले के पास खड़े शिवकुमार सूर्य की चौंध को हथेलियों के पीछे छिपाकर बात जारी रखते हैं–आप जिले की राजनीति के बारे में क्या जानना चाहते हैं ? 35 वर्ष बाद यह नए अध्याय की ओर बढ़ रही है।

इस लोकसभा चुनाव में मेनका गांधी या वरुण गांधी के नाम वाले नारे नहीं सुनाई दे रहे मगर, मैदान तो सजा ही है। इन्हीं में कोई एक सांसद बनेगा।

देश में लोकसभा चुनाव सात चरणों में होने वाले हैं। यह पीलीभीत है। आप जिले की राजनीति के बारे में क्या जानना चाहते हैं ? 35 वर्ष बाद यह नए अध्याय की ओर बढ़ रही है। इस लोकसभा चुनाव में मेनका गांधी या वरुण गांधी के नाम वाले नारे नहीं सुनाई दे रहे मगर मैदान तो सजा ही है। इन्हीं में कोई एक सांसद बनेगा।

अनीस अहमद किसे टंगड़ी लगाकर बढ़ना चाह रहे

एक लाइन के सवाल पर व्यापारी शिवकुमार 10 मिनट अनवरत बोलते रहे। जिले के राजनीतिक समीकरण उनकी हथेली पर रखे थे और जातिगत गणित अंगुलियों पर। उनका अंदाज यहां के मतदाताओं की हाजिर जवाबी का हस्ताक्षर था, जो राजनीति से दूर नहीं भागता, साथ चलता है। वह अनुमान जताते गए कि भाजपा प्रत्याशी जितिन प्रसाद की दौड़ कहां तक हो सकती है, सपा प्रत्याशी भगवत सरन गंगवार की गति क्या होगी और बसपा के अनीस अहमद किसे टंगड़ी लगाकर बढ़ना चाह रहे।

कोई मुद्दों पर बात नहल करता

मतदाता की हाजिर जवाबी का प्रमाण चौराहे से 15 किमी दूर न्यूरिया में भी मिला। वहां कलीमुल्ला इच्छा जताते हैं कि गठबंधन को अवसर मिलना चाहिए मगर, राह आसान नहीं है। इसका कारण पूछने पर जवाब आता है ' सही बात तो यह है कि राजनीति वर्गों के बीच बंट चुकी। मुद्दों पर बात कोई नहीं करता।' उनकी बात को 10 किमी दूर रुपपुर गांव में बैठे अनिल गंगवार इस तरह खंडित करते हैं ' बताइए, किस मुद्दे पर बात करें। बाघों से सुरक्षा और बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में बचाव का स्थायी समाधान चाहिए मगर, यह चुनाव के दौरान तो हो नहीं जाएगा। मजबूत सांसद तो बनने दीजिए, उन्हें केंद्र से ताकत मिलेगी तभी तो मुद्दे हल होंगे। अब तक हो हुआ, उसे भूलना पड़ेगा।'

वह सरकार की योजनाएं गिनाकर गांव की ओर इशारा करते कि वहां देख आइए। किसी का कच्चा घर नहीं बचा, सब आवास योजना में पक्के हो गए हैं। औरतें चूल्हा फूंकने के लिए जंगलों में लकड़ियां नहीं तलाश रहीं। शहर वापस आने पर स्टेशन चौराहा के पास भी कई लोग इसी तरह चुनावी चर्चा करते दिखते हैं।

जिले का राजनीतिक परिदृश्य

इस क्षेत्र से मेनका गांधी पहला चुनाव 1989 में जीतीं, तब से छह बार सांसद बनीं। वर्ष 2009 और 2019 में उनके बेटे वरुण गांधी विजयी हुए थे। जीत के कुछ समय बाद वरुण गांधी सरकार को असहज करने वाले सवाल करने लगे। सभाओं के मंच तो कभी इंटरनेट मीडिया पर उनके तेवर देखकर स्थानीय भाजपा नेता आसमान की ओर ताककर रह जाते थे। इस बार टिकट की बारी आई तो नेतृत्व ने उनके बजाय प्रदेश के लोक निर्माण विभाग मंत्री जितिन प्रसाद को प्रत्याशी बना दिया।

प्रत्याशी और मुद्दे

जितिन पड़ोसी जिला शाहजहांपुर के राजनीतिक परिवार से हैं। कांग्रेस से राजनीति शुरू कर दो बार सांसद रह चुके। वर्ष 2021 में भाजपा में शामिल होने के बाद से प्रदेश सरकार में मंत्री हैं। सपा ने पड़ोसी जिले बरेली के नवाबगंज से पूर्व मंत्री भगवत सरन गंगवार को मैदान में उतारा है। इस क्षेत्र में वर्ष 1991 में भाजपा के परशुराम गंगवार चुनाव जीते थे, दो बार गंगवार प्रत्याशी दूसरे नंबर पर रह चुके हैं।

सपा जातिगत कार्ड के सहारे है मगर, भाजपा ने इसकी काट के लिए प्रदेश के गन्ना राज्यमंत्री संजय गंगवार को आगे किया है। कुर्मी बहुल क्षेत्रों में उनके प्रवास हो रहे हैं। बसपा ने पूर्व मंत्री अनीस अहमद को प्रत्याशी बनाया है। वह बीसलपुर विधानसभा क्षेत्र से विधायक रह चुके हैं। भाजपाई उस ओर देखकर ठंडी सांस लेते हैं। वह भांपना चाहते हैं कि अनीस मुस्लिम मतों को कितना प्रभावित करेंगे, क्योंकि इस वोट बैंक पर तो सपा भी दावा करती है।

पिछले पांच चुनावों का मत प्रतिशत

वर्ष–	भाजपा –	सपा –	कांग्रेस –	बसपा
2019 –	59.34 –	37.81	–(प्रत्याशी नहीं)	
2014 –	32.73–	22.85–	1.75 –	18.68
2009 –	32.03 –	09.00 –	10.54 –	08.59
2004 –	21.54 –	12.89 –	08.95 –	10.22
1999 –	57.94 –	07.86 –00 –	25.88	

पिछले दो चुनावों का परिणाम

वर्ष 2019
विजेता– वरुण गांधी
दल – भाजपा
मत मिले– 704549
दूसरे स्थान पर– हेमराज वर्मा
दल– सपा
मत मिले– 448922
(अब हेमराज भाजपा में हैं।)
वर्ष 2014
विजेता– मेनका गांधी
दल– भाजपा
मत मिले – 546934
दूसरे स्थान पर – बुद्धसेन वर्मा
मत मिले– 239882

जिले की पहचान

जिले की पहचान टाइगर रिजर्व क्षेत्र में 72 से अधिक बाघ हैं। शारदा नदी किनारे चूका पिकनिक स्पाट पर्यटकों को आकर्षित करता है। जिले की सीमा नेपाल से जुड़ी है, जिसके आसपास बड़ी संख्या में शरणार्थी परिवार रहते हैं। यहां की बांसुरी देश–दुनिया में पहचान रखती है, जिसे ओडीओपी में भी शामिल किया गया है। तराई क्षेत्र होने के कारण कृषि सबसे बड़ा उद्यम है। बता दें कि वरुण गांधी पीलीभीत से दो बार सांसद रहे, लेकिन इस बार पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया है।

सपा ने मेरठ सीट पर फिर बदला प्रत्याशी

अब सुनीता वर्मा को दिया मौका अतुल प्रधान ने दी पार्टी को चेतावनी

मेरठ। समाजवादी पार्टी ने मेरठ से फिर प्रत्याशी बदल दिया है। अब सुनीता वर्मा को टिकट दिया गया है। समाजवादी पार्टी ने मेरठ से फिर प्रत्याशी बदल दिया है। अब सुनीता वर्मा को टिकट दिया गया है। आज वह नामांकन दाखिल करेंगी। वहीं योगेश वर्मा लखनऊ में सिंबल लेने के लिए पहुंचे। उधर अतुल प्रधान ने टिकट काटे जाने पर इस्तीफे की पेशकश कर दी है। उन्होंने कहा कि यदि मेरा टिकट कटा तो मैं विधायक पद से इस्तीफा दूंगा। कहा जा रहा है कि वह विधानसभा अध्यक्ष को आज ही इस्तीफा भेज सकते हैं।

अतुल प्रधान का मेरठ से लोकसभा का टिकट कटा है। बुधवार को ही उन्होंने नामांकन दाखिल किया था। चर्चा है कि अतुल प्रधान समाजवादी पार्टी से भी इस्तीफा दे सकते हैं।अतुल का टिकट काटकर अखिलेश यादव ने अब सुनीता वर्मा का टिकट फाइनल कर दिया है।

वहीं बार बार प्रत्याशियों के बदले जाने और उनका टिकट काटे जाने को लेकर जयंत चौधरी ने एक्स अकाउंट पर चुटकी ली है। उन्होंने एक पोस्ट करते हुए लिखा कि विपक्ष में किस्मत वालों को ही कुछ घंटों के लिए लोक सभा प्रत्याशी का टिकट मिलता है! और जिनका टिकट नहीं कटा, उनका नसीब। बता दें कि अतुल प्रधान ने पर्चा दाखिल कर दिया था लेकिन सपा में घमासान नहीं थमा। वहीं दावेदार लखनऊ में डटे हुए थे। बुधवार रात से ही यह चर्चा थी कि नया एलान हो सकता है। भानु प्रताप सिंह, रफीक अंसारी समेत कई नेता लखनऊ में डटे हुए थे। सपा में टिकट को लेकर खींचतान जारी रही और फिर गुरुवार को नामांकन के आखिरी दिन सुनीता वर्मा के नाम का एलान कर दिया गया। बता दें कि सपा ने प्रत्याशी एडवोकेट भानु प्रताप का टिकट काटकर अतुल प्रधान को सोमवार रात टिकट दिया था।

सपा से अतुल प्रधान और बसपा से देवव्रत त्यागी ने पर्चा भरा था, दोनों पार्टी के उम्मीदवारों ने भाजपा प्रत्याशी पर निशाना साधा। नामांकन पत्र जमा करने के बाद अतुल प्रधान ने मीडिया से बातचीत भी की थी, लेकिन कार्यकर्ताओं तक नहीं पहुंचे। वहीं सपा कार्यकर्ता कलक्ट्रेट में करते इंतजार करते रह गए। इसे लेकर उन्होंने नाराजगी भी जताई।

वहीं सुनीता वर्मा को टिकट दिए जाने के बाद उनके पति योगेश वर्मा ने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट की। उन्होंने लिखा कि मेरठ हापुड़ लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के रूप में सुनीता वर्मा को प्रत्याशी घोषित करने पर शीर्ष नेतृत्व का आभार! वहीं टिकट काटे जाने के बाद सपा विधायक अतुल प्रधान ने भी एक्स पर एक पोस्ट की है। उन्होंने पोस्ट किया– जो राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी का निर्णय है, वो स्वीकार है ! जल्द ही साथियों से बैठकर बात करेंगे।

सपा दफ्तर पहुंचे अतुल प्रधान, योगेश वर्मा को मिला लसबल

आज सुबह अखिलेश ने अतुल प्रधान और योगेश वर्मा को बुलाकर बात की। इसके बाद सुनीता वर्मा को योगेश वर्मा पार्टी का सिंबल लेकर गए। पत्नी सुनीता वर्मा आज करेंगी नामांकन।

बरेली नई जमीन पर दिग्गजों का मुकाबला दिलचस्प होगा। भाजपा ने जितिन को मौका दिया है, सपा ने पिछड़ा और बसपा ने मुस्लिम चेहरे पर दांव लगाया है। पीलीभीत में आजादी के बाद से सात सांसद कुर्मी बिरादरी से हुए हैं, मेनका गांधी ने किला ढहाया था। जल, जंगल और जमीन से जुड़ी पीलीभीत लोकसभा सीट पर वरुण गांधी के मैदान से हटने के बाद दिग्गजों के बीच मुकाबला दिलचस्प होने के आसार हैं। सियासी मैदान में बसपा के अनीस अहमद खां उर्फ फूल बाबू को छोड़ दिया जाए तो भाजपा के जितिन प्रसाद और सपा के भगवत सरन गंगवार के लिए यहां का रण बिल्कुल नया है। ऐसे में प्रदेश सरकार के मंत्री और भाजपा प्रत्याशी जितिन प्रसाद के सामने गढ़ बचाने की चुनौती है तो सपा के भगवत सरन गंगवार के सामने पिछड़ा–मुस्लिम गठजोड़ के फार्मूले को साबित करने का मौका है। उधर, इस सियासी धरा के पुराने खिलाड़ी बसपा प्रत्याशी अनीस अहमद उर्फ फूल बाबू तीसरी बार मैदान में हैं और उन्हें मुस्लिम–दलित व पिछड़ा वर्ग से समर्थन मिलने का पूरा भरोसा है। कुर्मी मतदाताओं की निर्णायक भूमिका वाली इस लोकसभा सीट पर भाजपा ने हिंदू मतों के भरोसे जितिन प्रसाद को मैदान में उतारा है।

वहीं, सपा ने कुर्मी बिरादरी में प्रभाव रखने वाले बरेली के भगवत सरन गंगवार को उम्मीदवार बनाकर मुस्लिम–कुर्मी मतों के सहारे कामयाबी का ताना–बाना बुना है। बसपा ने अपने दलित–मुस्लिम कार्ड को फिर से यहां आजमाने की कोशिश की है और अनीस अहमद खां पर विश्वास जताया है। चार दशक से भाजपा का मजबूत गढ़ रही इस लोकसभा सीट पर 35 वर्षों में यह पहला मौका है, जब मेनका गांधी या वरुण गांधी यहां से भाग्य नहीं आजमा रहे हैं। भाजपा ने परिवारवाद की राजनीति को खारिज करने की गरज से शाहजहांपुर और धौरहरा से सांसद रहे वर्तमान में प्रदेश के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद को मैदान में उतारकर अगड़े वोट बैंक को साधने की कोशिश की है।

यही नहीं स्थानीय मंत्री संजय गंगवार, हाल ही में सपा छोड़कर आए हेमराज वर्मा, धर्मपाल सिंह सहित एनडीए गठबंधन की निषाद पार्टी के संजय निषाद के जरिये पिछड़ा वोट बैंक को पाले में लाने में भी पार्टी जुटी है। हिंदू मतों को एकजुट करने के साथ ही मुस्लिम मतों में सेंधमारी की कोशिश भी संगठन के जरिये हो रही है। दूसरी तरफ, सपा अपने प्रत्याशी भगवत सरन गंगवार के जरिये कुर्मी के अलावा यादव, लोधी और अन्य पिछड़ा वर्ग के साथ ही मुसलमान मतदाताओं को अपने पाले में लाने की कवायद में जुटी है। कुछ इसी फार्मूले पर बसपा भी आगे बढ़ रही है और उसने तीसरी बार अनीस अहमद खां को मैदान में उतारा है। फिलहाल, वरुण गांधी के मैदान से हटने के बाद इस पुरानी सियासी जमीन पर नए चेहरों के बीच होने वाले मुकाबले पर सबकी निगाहें टिकी हैं।

पीलीभीत लोकसभा सीट पर मुस्लिम और कुर्मी बिरादरी के मतदाताओं पर खासतौर से सभी दलों की निगाहें हैं। ये दोनों ही चुनावी समीकरण बनाने और बिगाड़ने का काम करते हैं। इसके अलावा लोधी किसान और राजपूतों की भी भूमिका अहम मानी जाती है। क्षेत्र के अंतर्गत पीलीभीत जिले के सदर विधानसभा क्षेत्र में लगभग 60 से 70 हजार, बीसलपुर विधानसभा क्षेत्र में 70 से 80 हजार व बरखेड़ा विधानसभा क्षेत्र में लगभग 30 हजार कुर्मी मतदाता हैं। पूरनपुर विधानसभा क्षेत्र में कुर्मी मतदाताओं की संख्या कम है। वहीं इसी लोकसभा क्षेत्र में शामिल बरेली की बहेड़ी विधानसभा सीट में लगभग 85 हजार कुर्मी मतदाता हैं। पूरे लोकसभा क्षेत्र में 30 फीसदी मुस्लिम मतदाता हैं।

जातिगत आंकड़े

मुस्लिम– पांच लाख, लोधी किसान– चार लाख 35 हजार, कुर्मी– दो लाख 15 हजार, मौर्य– 70 हजार, पासी– 70 हजार, जाटव– 65 हजार, बंगाली– 50 हजार, ब्राह्मण– 50 हजार, सिख– 45 हजार, कश्यप– 40 हजार, भुर्जी– 28 हजार, बढ़ई– 26 हजार, धोबी– 26 हजार, ठाकुर– 22 हजार, नाई– 19 हजार, यादव– 18 हजार, बनिया– 18 हजार, कुम्हार– 18 हजार, राठौर– 17 हजार, खटीक– 12 हजार, कोरी– 12 हजार, जाट– 12 हजार, कायस्थ– 12 हजार, पाल– आठ हजार, बेलदार– आठ हजार, गुर्जर– आठ हजार, धानुक– सात हजार, वाल्मीकि– सात हजार, गिरि– पांच हजार, सुनार– पांच हजार, जायसवाल–पांच हजार, माली– दो हजार, दर्जी– दो हजार, नट– एक हजार, ईसाई– एक हजार।

नोट–– यह आंकड़े विभिन्न राजनीतिक दलों के आकलन के आधार पर हैं। इसमें बदलाव भी संभव है।

33 वर्ष पहले भाजपा की सेंधमारी, सात बार कुर्मी सांसद

इस सीट पर सात बार कुर्मी बिरादरी का ही सांसद चुना गया, लेकिन वर्ष 1989 के लोकसभा चुनाव में मेनका गांधी की एंट्री के बाद यहां की राजनीति बदल गई। जनता दल के टिकट पर मैदान में उतरीं मेनका ने कुर्मी बिरादरी के दिग्गज कांग्रेस के भानु प्रताप सिंह को करारी शिकस्त दी। इसके बाद यहां से वर्ष 1991 की राम लहर में भाजपा के टिकट पर परशुराम गंगवार ने बमुश्किल चुनाव जीता था। उसके बाद से कुर्मी बिरादरी के दिग्गज चुनाव मैदान में तो उतरे लेकिन संसद में दाखिल नहीं हो सके। इससे पहले वर्ष 1957 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के कुंवर मोहन स्वरूप चुनाव जीते थे। कुर्मी बिरादरी के कुंवर मोहन स्वरूप लगातार चार बार यानी वर्ष 1971 में हुए चुनाव तक पीलीभीत के सांसद रहे। इसके बाद वर्ष 1980 में बरेली के हरीश कुमार गंगवार कांग्रेस से पीलीभीत के सांसद चुने गए। वर्ष 1984 का चुनाव बरेली के ही भानु प्रताप सिंह ने कांग्रेस की टिकट पर जीता था।

सम्पादकीय

इस भारत को न जानने और न मानने वाले

इस बार के चुनाव शुरु होने से पहले ही जिस तरह बार–बार बहुमत की जगह 4 सौ के आंकड़े को भाजपा ने लोगों के दिल–दिमाग में बिठाने की कोशिशें शुरु कर दी हैं, दरअसल वह एक बड़े खेल की रणनीति है। जिसमें जनता को मानसिक तौर पर एक बड़े बदलाव के लिए तैयार किया जा सके। 2014 में अच्छे दिनों का जुमला भी ऐसा ही एक खेल था। 18वीं लोकसभा का चुनाव शुरु होने में अब केवल 15 दिन रह गए हैं। भाजपा का दावा है कि वह तीसरी बार सत्ता में वापसी करने जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने 15 अगस्त 2023 को लालकिले से ऐलान कर ही दिया था कि वे अगली बार भी झंडा फहराने आएंगे। इसके अलावा अलग–अलग मौकों पर कई मंचों से उन्होंने अपनी वापसी का तानाशाही भरा ऐलान किया। हाल ही में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के 90वें स्थापना दिवस पर भी प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि मैं सौ दिन चुनाव में व्यस्त हूं, तब तक का वक्त आप लोगों के पास है। उसके बाद आप तैयार हो जाइए धमाधम काम आने वाला है। उनकी इस बात पर वहां मौजूद तमाम रसूखदार लोग कठपुतलियों की तरह ताली बजाते और ठहाका भरते नजर आए। किसी ने यह सवाल करने की जहमत नहीं उठाई कि साहब पहले मतदान तो हो जाने दीजिए। सात चरणों में मतदान होगा, फिर 4 जून को नतीजे आएंगे, तब बता दीजिएगा कि धमाधम काम आएगा या नहीं।

प्रधानमंत्री का एकालाप मगन होकर सुनने वालों में राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री और भारत सरकार के आला दर्जे के अफसर सभी शामिल थे, लेकिन सभी में रीढ़ की हड्डी गायब दिखी। इनकी शिक्षा, अनुभव, ओहदा, सब बेकार नजर आए। वहीं एक निजी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में तिहाड़ जेल जा चुके एक कथित पत्रकार भाजपा के झूठ को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। अपने संबोधन में इन पत्रकार महोदय ने यूक्रेन और रूस के युद्ध को नरेन्द्र मोदी ने रुकवाया है, इस झूठ को आगे बढ़ाने की कोशिश की। लेकिन श्रोताओं में मौजूद एक छात्रा ने पलट कर कह दिया कि अच्छा तो तब लगता जब युद्ध वाकई रुका होता। इस छात्रा की हिम्मत रिजर्व बैंक के समारोह में उपस्थित कथित गणमान्य लोगों की काबिलियत पर भारी दिखी। कम से कम उसने सच बोलने और झूठ बोलने पर टोकने का जज्बा तो दिखाया वर्ना यह सिलसिला ऐसे ही आगे बढ़ता रहता।

इस वक्त देश में उस छात्रा जैसी हिम्मत और तार्किक सोच रखने वालों की सख्त जरूरत है। क्योंकि इस बार के चुनाव वाकई तय करेंगे कि अब देश में संविधान बचा रहेगा या फिर देश हिंदू राष्ट्र बन जाएगा। व्हाट्सऐप पर एक संदेश इन दिनों खूब प्रसारित किया जा रहा है। जिसमें लिखा है कि किसे वोट दें, यह समझ नहीं आए तो किन–किन लोगों से पूछना चाहिए। फिर इसमें कश्मीरी पंडितों, राम मंदिर के भक्तों, तीन तलाक पाने वाली महिलाओं, 5 किलो मुफ्त अनाज पाने वाले गरीब, आयुष्मान कार्डधारी लोगों, ऐसे कई वर्गों का जिक्र किया गया है और इसमें खुलकर झूठ का बखान भी है, जैसे 24 घंटे बिजली पाने वाले, सीधे खाते में रुपए पाने वाले आदि बातों को लिखा गया है।

बड़ी सफाई से 15 लाख हर खाते में, हर साल 2 करोड़ रोजगार, किसानों की दोगुनी आय, सस्ता पेट्रोल और रुपए की कीमत में सुधार जैसी बातों को छोड़ दिया गया है। फिर इसमें अपील की गई है कि इसे 10 हिंदू मित्रों और रिश्तेदारों के साथ साझा करें। आगे इस संदेश में ये भी बताया गया है कि इस बार 400 पार जाना क्यों जरूरी है। संसद में सीटों का आंकड़ा समझाते हुए कहा गया है कि इस बार मोदी जी को 407 सीटें दीजिए। मोदी 3.0 2024 में होगा तो वक्फ बोर्ड खत्म होगा, 10 करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठियों को भगा देंगे, अल्पसंख्यक आयोग खत्म होगा, पूजा स्थल कानून खत्म हो जाएगा, आतंकवाद की फैक्ट्री वाले मदरसों पर रोक लगाई जाएगी और समान शिक्षा कानून बनाया जाएगा, केंद्र और 29 राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे 600 अल्पसंख्यक मंत्रालय खत्म हो जाएंगे, 4–4 निकाह और 3 तलाक पर रोक लग जाएगी, पत्थरबाजों और दंगाइयों की 100प्रतिशत संपत्ति जब्त कर 10 साल की सजा का प्रावधान होगा। इसके बाद आखिरी में लिखा है कि आईटी, मैन्युफैक्चरिंग, एआई, कृषि और इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश 100प्रतिशत बढ़ाया जाएगा।

व्हाट्सऐप पर प्रसारित हो रहा ये संदेश बहुत बड़ा है, जिसे संक्षिप्त में ऊपर वर्णित किया गया है। इस संदेश को देखने के बाद कोई संदेह नहीं रह जाता कि नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के पीछे की मंशा देश का संविधान बदलना है। ध्यान देने की बात ये है कि भाजपा अपने इस मकसद को बड़ी चालाकी से जनता तक पहुंचा रही है। क्योंकि मोदी की गारंटियों में कहीं हिंदू राष्ट्र बनाने का जिक्र नहीं है। भाजपा का घोषणापत्र भी अब तैयार हो रहा है, जिसमें सरकार की उपलब्धियों और कश्मीर, राम मंदिर जैसी बातों का उल्लेख होगा, लेकिन साफ तौर पर ये कहीं नहीं लिखा होगा कि हम तीसरी बार सत्ता में आएंगे तो संविधान बदल देंगे। मगर भाजपा काम उसी दिशा में कर रही है।

भाजपा के सांसद अनंत हेगड़े ने पिछले दिनों कहा था कि अगर 4 सौ से ज्यादा सीटें एनडीए को मिलती हैं, तो संविधान बदल देंगे। वहीं हाल ही में राजस्थान के नागौर से भाजपा प्रत्याशी ज्योति मिर्धा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें वे अपने प्रचार के दौरान लोगों से कह रही हैं कि– आप लोग जानते हैं कि अगर संविधान में हमें कोई बदलाव करना होता है तो संसद के दोनों सदनों– लोकसभा और राज्यसभा में बहुमत की आवश्यकता होती है। लोकसभा में आज बीजेपी और एनडीए के पास प्रचंड बहुमत है लेकिन राज्यसभा में आज भी हमारे पास बहुमत नहीं है।

यहां ज्योति मिर्धा ने संसद के आंकड़े वैसे ही लोगों को समझाए जैसे व्हाट्सऐप में समझाए गए हैं। इसका मतलब भाजपा का एजेंडा एकदम साफ है कि उन्हें 4 सौ सीटें संविधान बदलने के लिए चाहिए। ज्योति मिर्धा के इस वीडियो पर जब सवाल उठे, तो उन्होंने सफाई दी कि उनके बयान को बढ़ा–चढ़ा कर पेश किया गया है। वे लोगों को केवल संविधान संशोधन की प्रक्रिया समझा रही थीं। ज्योति मिर्धा का यह दावा भी झूठा ही है, क्योंकि उन्होंने साफ–साफ संविधान में बदलाव की बात की है। जबकि 1950 से लेकर अब तक सौ से ज्यादा संशोधन संविधान में हो चुके हैं और इस दौरान जो भी गठबंधन या दल सत्ता में रहा, उसे इसके लिए 4 सौ से ज्यादा सीटों की जरूरत नहीं पड़ी।

इस बार के चुनाव शुरु होने से पहले ही जिस तरह बार–बार बहुमत की जगह 4 सौ के आंकड़े को भाजपा ने लोगों के दिल–दिमाग में बिठाने की कोशिशें शुरु कर दी हैं, दरअसल वह एक बड़े खेल की रणनीति है। जिसमें जनता को मानसिक तौर पर एक बड़े बदलाव के लिए तैयार किया जा सके।

2014 में अच्छे दिनों का जुमला भी ऐसा ही एक खेल था, जिसमें उलझ कर जनता ने भाजपा को बहुमत दिया था। यह एक किस्म की मनोवैज्ञानिक रणनीति है, जिसमें एक ही बात को इतनी बार कहा जाए कि फिर उसके होने पर लोग यकीन करने लगें और जब दावे के अनुरूप कुछ न हो, तब भी सवाल पूछने की जरूरत महसूस न हो।

जनता को मनोवैज्ञानिक तौर पर प्रभावित करने का एक और जरिया फिल्में और गीत भी हैं। कश्मीर फाइल्स और द केरला स्टोरी के बाद इस बार के चुनाव से पहले आर्टिकल 370, वीर सावरकर और जेएनयू जैसी फिल्मों का जिक्र भाजपा खेमे से होने लगा है। प्रधानमंत्री मोदी भी कई बार अपने भाषणों में इन फिल्मों का प्रचार करते दिखे और यह समझना कठिन नहीं है कि देश के लिए करने वाले सारे कामों को छोड़कर उन्हें किसी फिल्म के प्रचार की जरूरत क्यों पड़ती है। बहरहाल, जेएनयू यानी जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी नाम की फिल्म का एक गीत अभी चर्चा में आया है, जिसमें लेखक, अभिनेता पीयूष मिश्रा पर फिल्माया गया है, आवाज भी उन्हीं की है। इस गीत के बोल हैं– पूंजीवाद से मुझको डराते हो क्यों, मुझको लेनिन के सपने दिखाते हो क्यों, चे ग्वारा है जो, सिर्फ चेहरा है वो, उसके अंदाज को, उसके जज्बात को मैं नहीं मानता, मैं नहीं जानता। ये गीत सीधे–सीधे पाकिस्तान के बड़े शायर हबीब जालिब की नज्म दस्तूर की नकल पर लिखा गया है, हालांकि इसमें अक्ल का इस्तेमाल जरा भी नहीं किया गया है। हबीब जालिब ने लिखा था–

दीप जिस का महल्लात ही में जले, चंद लोगों की खुशियों को ले कर चले,
वो जो साए में हर मस्लहत के पले, ऐसे दस्तूर को सुब्ह–ए–बे–नूर को
मैं नहीं मानता मैं नहीं जानता।

इस गीत में तानाशाही के खिलाफ बड़े सलीके से आवाज बुलंद की गई थी और इसकी कीमत भी हबीब जालिब ने चुकाई। लेकिन उनके दस्तूर को बड़ी बेहूदगी के साथ जेएनयू फिल्म के गीत में निभाया गया है। कोई लेनिन या चे ग्वारा को माने या न माने, यह उसकी मर्जी है। लेकिन उन्हें केवल चेहरा बताने की सोच यह दर्शाती है कि इस गीत को लिखने और गाने वालों के पास इतिहास, राजनीति और कला बोध की बेहद कमी है। हालांकि इतना तय है कि पूंजीवाद से डराने पर आपत्ति करने वाले असल में तानाशाही कायम करने के हिमायती हैं, तभी वे लेनिन के सपनों और चे ग्वारा के अंदाज ही नहीं नेहरू, गांधी और अंबेडकर के अनेकता में एकता वाले भारत को भी न जानते हैं, न मानते हैं।

दुनिया में अब तक का सबसे महंगा होगा 2024 का लोकसभा चुनाव

व्यक्तिगत विवरण को छोड़ दें, जो कई लोगों के लिए बहुत सुखद नहीं हो सकता है, भारत में लोकतंत्र का नृत्य एक महंगा मामला है। पश्चिमी गोलार्ध के बाहर किसी भी चीज़ के प्रति अपने दंभपूर्ण रवैये के बावजूद, लंदन की द इकानॉमिस्ट पत्रिका स्वीकार करती है कि चालू वर्ष का भारतीय आम चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव हो सकता है। अविश्वसनीय रूप से, अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से भी महंगा। आपने भारत के वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और इस साल की शुरुआत में उनके द्वारा पेश किये गये अंतरिम बजट के बारे में जो भी सोचा हो, एक बात आपको माननी ही होगी कि वह एक ईमानदार व्यक्ति हैं। भारत सरकार के लाखों करोड़ रुपये के खर्च की अध्यक्षता करने के बाद, भी वित्त मंत्री ने स्वीकार किया कि उनके पास संसदीय चुनाव लड़ने के लिए पर्याप्त धन नहीं है।

दरअसल, भारतीय चुनाव बेहद महंगे हैं और यह आश्चर्य की बात है कि इतने सारे दावेदार इन्हें इतने भव्य तरीके से कैसे लड़ते हैं। चुनावी फंडिंग हमेशा से एक पेंचीदा विषय रहा है और पिछले कुछ वर्षों में इसमें कई उतार–चढ़ाव आये हैं। वास्तव में पैसा कहां से आयेगा? एक समय था जब कॉर्पोरेट योगदान कानूनी थे और कॉर्पोरेट्स से खुले तौर पर और कानूनी रूप से योगदान करने की उम्मीद की जाती थी, इंदिरा गांधी जैसे प्रधानमंत्री ने इसमें अंकुश लगाया था, जिन्होंने राजनीतिक दलों और चुनावों में कॉर्पोरेट योगदान पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बाद, उनके बेटे राजीव गांधी ने प्रतिबंध हटा दिया।

पारदर्शी चुनाव की खोज में अनगिनत प्रस्ताव रखे गये। शीर्ष पंक्ति में से एक चुनाव के लिए राज्य द्वारा वित्त पोषण था। राजनीतिक दलों द्वारा लूट–खसोट के लिए सरकारी वित्त के दुरुपयोग के डर से इसे तुरंत स्वीकार नहीं किया गया। अब भी, दोनों कम्युनिस्ट पार्टियां ऐसी फंडिंग व्यवस्था के पक्ष में हैं। दोनों वामपंथी दलों को छोड़कर, अधिकांश राजनीतिक दल राजनीतिक फंडिंग को लेकर परेशान रहते हैं क्योंकि वे चोरी–छिपे पैसा कमाने का रास्ता अपनाते हैं। भाजपा जहां एक ओर अवैध धन कमाने की अवधारणा पर हमला कर रही है, वहीं उसने अब असंवैधानिक घोषित चुनावी बांड स्वीकार कर लिया, और हम चुनावी बांड के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उससे तो बांड के माध्यम से चुनावी फंडिंग का रहस्य और भी गहरा हो गया है।

एक लॉटरी किंग चुनावी बांड के दानकर्ताओं में सबसे आगे रहा। बांड से मिले धन किसे लाभ पहुंचाते हैं, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है। लेकिन जाहिर है, लाभार्थियों से मेल खाने वाले योगदानकर्ताओं की स्मोकस्क्रीन के तहत, यह अनुमान लगाना अभी भी संभव है कि कौन किस पार्टी को योगदान दे रहा है– यह योगदानकर्ता के प्रमुख संचालन के क्षेत्रों और उस क्षेत्र में प्रमुख पार्टियों के बीच होना चाहिए। इसका कारण यह है कि दक्षिण स्थित लॉटरी किंग को अत्यधिक लोकप्रिय दक्षिणी पार्टियों में से कुछ को लाभ पहुंचाना चाहिए। पूर्व भारत में, बिजली वितरण कंपनी, जो सिटी ऑफ जॉय अर्थात कोलकाता में एकाधिकार का आनंद ले रही थी, उसके वहां के ही राजनीति बॉस को खुश रखने की उम्मीद थी न कि सुदूर उत्तर प्रदेश या छत्तीसगढ़ में। भाजपा के पास बड़ा चुनावी बांड का अधिक हिस्सा जाना कोई आखिरी आश्चर्य भी नहीं है। लेकिन कुछ क्षेत्रीय सरदार भी काफी धन पा सके। एक उदाहरण के रूप में छोटे अंकगणित पर विचार करें: भाजपा को देश भर में अपने सहयोगियों के साथ 543 सीटें हासिल करनी हैं और 8250 करोड़ रुपये जुटाने हैं। इसलिए प्रति सीट चुनावी बांड के तहत संग्रह लगभग 16 करोड़ रुपये होगा। यदि यह माना जाये कि भाजपा लगभग 500सीटों पर चुनाव लड़ेगी और शेष सहयोगी दलों के लिए छोड़ देगी तो यह चुनावी बांड की कुल धनराशि उस वास्तविक राशि का एक छोटा सा हिस्सा है जो पार्टी वास्तव में अपने उम्मीदवारों को जिताने के लिए खर्च करेगी। इसी तरह, तृणमूल कांग्रेस ने 1600 करोड़ रुपये जुटाये हैं और उसे लगभग 42 सीटें, प्लस/माइनस कुछ और सीटें जीतनी हैं। इसलिए प्रतियोगिता के लिए प्रति सीट 38 करोड़ रुपये की सम्मानजनक राशि है, जो एक छोटी पार्टी के लिए बुरा नहीं है। व्यक्तिगत विवरण को छोड़ दें, जो कई लोगों के लिए बहुत सुखद नहीं हो सकता है, भारत में लोकतंत्र का नृत्य एक महंगा मामला है। पश्चिमी गोलार्ध के बाहर किसी भी चीज़ के प्रति अपने दंभपूर्ण रवैये के बावजूद, लंदन की द इकानॉमिस्ट पत्रिका स्वीकार करती है कि चालू वर्ष का भारतीय आम चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव हो सकता है। अविश्वसनीय रूप से, अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से भी महंगा। ब्लूमबर्ग के अनुमान के अनुसार, 2019 में पिछले आम चुनाव में लगभग 8.6 बिलियन डॉलर खर्च होने का अनुमान है। मौजूदा चुनाव में लगभग 12 अरब डॉलर खर्च होने का अनुमान लगाया गया है। देश की 3.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए इस आम चुनाव में खर्च सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.15 फीसदी ही होगा। एक छोटा अंश, अधिसंख्य लोग सोचेंगे। वास्तव में, दो कारणों से ऐसा नहीं है। पहला, आम चुनाव हमेशा कीमतों को बढ़ाता है। चूंकि अधिकांश खर्च जमीनी स्तर पर होंगे, और पैसा उन जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के हाथों में चला जाता है, जिससे उनके हाथ में थोड़े समय के भीतर काफी अधिक आय खर्च करने योग्य होता है। प्रतिशत के अलावा, इस तरह के पैसे को अचानक सबसे निचले स्तर पर डालने से मांग में थोड़ा उछाल आता है। ऐसी स्थिति में जब कीमतें पिछले कुछ समय से लगातार बढ़ रही हैं, मूल्य नियंत्रित करने वाले अभिभावकों को थोड़ा सतर्क ही रहना चाहिए। अधिक उदार मौद्रिक नीति की कोई भी आशा संदर्भ से थोड़ी हटकर होगी। दूसरे, अधिकांश खर्च नकद में होंगे। नतीजतन, खर्च वह होगा जिसे मोटे तौर पर काला धन कहा जा सकता है। दान देने वाले और खर्च करने वाले सभी ऐसे खर्चों में आनंद लेंगे जहां पैन नंबर जांच का पहला बिंदु नहीं होगा। काले धन के प्रचलन में बढ़ोतरी इसके निहितार्थ होंगे। यह मानकर चला जा सकता है, और मैं विश्वास करता हूं कि 'काले धन को रोकने' के लिए नोटबंदी का एक और दौर नीति–निर्माताओं के मन में नहीं होगा।

'आप' की दुर्दशा से विपक्ष के लिये सबक

एक तरफ तो देश लोकसभा चुनाव के मुहाने पर खड़ा है वहीं दूसरी तरफ जो अनेक घटनाक्रम जारी हैं उनमें राजनैतिक बयानों, सीटों के तालमेल, प्रचार सभाओं, प्रेस कांफ्रेंसों आदि के अलावा जिस विषय की सर्वाधिक चर्चा है। एक तरफ तो देश लोकसभा चुनाव के मुहाने पर खड़ा है वहीं दूसरी तरफ जो अनेक घटनाक्रम जारी हैं उनमें राजनैतिक बयानों, सीटों के तालमेल, प्रचार सभाओं, प्रेस कांफ्रेंसों आदि के अलावा जिस विषय की सर्वाधिक चर्चा है, वह है आम आदमी पार्टी के नेताओं पर कथित शराब घोटाले की जांच के सिलसिले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की रोज गिरती गाज। पिछले लगभग एक पखवाड़े के भीतर दो बार ईडी की हिरासत (पहले 6 एवं बाद में 4 दिनों की) में रहने के बाद मंगलवार को राउज़ एवेन्यू कोर्ट द्वारा 15 दिनों की न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल भेजे गये दिल्ली के मुख्यमंत्री व आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल अब दिल्ली हाईकोर्ट में जमानत पाने हेतु संघर्षरत हैं। दूसरी ओर करीब 6 माह जेल में गुजारने के बाद पार्टी के सांसद संजय सिंह जमानत पाने में सफल हो चुके हैं।

हालांकि उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया एवं पूर्व स्वास्थ्य मंत्री रहे सत्येन्द्र जैन अब तक सलाखों के पीछे हैं। इतना ही नहीं, आप सरकार की मंत्री आतिशी व स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज मुख्य रूप से सीधे तौर पर कहें तो ईडी के और परोक्ष रूप से भारतीय जनता पार्टी के निशाने पर हैं। कोई दावे से नहीं कह सकता कि आप के कितने मंत्री, विधायक या नेता भी जांच एजेंसी के रडार पर हैं। यह साफ हो जाने के बाद कि इसे करोड़ों का घोटाला बतलाकर दो साल से इसकी जांच कर रही ईडी न तो एक पैसा बरामद कर सकी और न ही यह बतला पाई है कि इसका पैसा किसे मिला है, न तो जांच पूरी हो सकी है और न ही गिरफ्तारियां रुक रही हैं।

अब तो यह भी साफ हो चला है कि भाजपा का उद्देश्य जो पहले आप को कमजोर करना था, अब वह चाहती है कि पार्टी नेताओं का ज्यादा से ज्यादा समय कोर्ट–कचहरियों में उलझकर बर्बाद होता रहे ताकि वे पार्टी का प्रचार न कर सकें। आप की दिल्ली के अलावा पंजाब में बड़ी उपस्थिति है परन्तु भाजपा की वहां कोई बड़ी दावेदारी नहीं है। भाजपा की दिलचस्पी ही नहीं, बल्कि नाक का भी सवाल है कि वह दिल्ली लोकसभा की सारी सीटें जीते। आप के हाथों विधानसभा चुनावों में मिली दो–दो बार की पराजयों के भी मद्देनज़र वह आहत है तथा अगला विधानसभा चुनाव जीतने के लिये उसे यहां से बड़ी जीत चाहिये जिसके आसार काफी कम हैं यह बात सामने आ चुकी है कि जांच एजेंसियां भाजपा के वे हथियार हैं जिनके बल पर वह 'ऑपरेशन लोटस' के नाम से निर्वाचित सरकारों को गिराती है, अल्पमत में होकर भी अपनी सरकारें बनाती है, विरोधियों को उनका डर दिखाकर अपने खेमे में करती है, अपने लिये चुनावी चंदा बटोरने में उसका सहयोग लेती है।

अब जबकि मतदान कुछ ही दिनों की दूरी पर रह गया है, आप का कांग्रेस के साथ दिल्ली में गठबन्धन हो चुका है, सीटों के बंटवारे पर मुहर लग चुकी है, वह कांग्रेस के नेतृत्व में बने इंडिया गठबन्धन का हिस्सा भी बन चुका है (यह निर्णय भी उसने काफी देर से लिया) तथा उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ 31 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया के सभी दलों ने एक विशाल रैली भी की थी– तो भी यह उन दलों व नेताओं के मंथन का मुफ़ीद अवसर है जो अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के चलते देश व लोकतंत्र पर छाये उस बड़े खतरे से आंखें मूंदे हुए हैं जो एक बहुत बड़े रूप में सबके समक्ष है। पिछले 10 वर्षों में, खासकर भाजपा के 2019 से जारी दूसरे कार्यकाल के दौरान जिस प्रकार से सरकार निरंकुश बनी है, उसमें प्रमुख हमला विपक्ष पर हो रहा है। 2014 में तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'कांग्रेस मुक्त भारत' का ही नारा दिया था लेकिन अब वह 'विपक्ष मुक्त भारत' का सपना न केवल देख रही है बल्कि उसे साकार भी कर रही है। उसका ऑपरेशन लोटस तथा विपक्ष को तोड़ने में जांच एजेंसियों का निर्लज्ज इस्तेमाल इसी अभियान के माध्यम व उपकरण हैं। हाईकोर्ट में केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी कह चुके हैं कि भाजपा आप को पूरी तरह से खत्म करना चाहती है। यह समय इस बात को याद करने का भी है कि आप लम्बे समय तक भाजपा की 'बी' टीम के रूप में काम करती रही है। राजनैतिक महत्वाकांक्षा कोई बुरी बात नहीं और यह सभी का हक भी है कि वह जिस प्रकार से चाहे अपना विस्तार करे, लेकिन आम आदमी पार्टी के बहुत से निर्णय भाजपा को मजबूत करने के हुए हैं। जनांदोलन तथा सिविल सोसायटियों से निकली पार्टी यह समझ नहीं पाई– यह आश्चर्य है। उसने कई ऐसे राज्यों में चुनाव लड़े जहां उसका अस्तित्व तक नहीं था। अब भी पंजाब में वह कांग्रेस से अलग चुनाव लड़ रही है। आप की जो मौजूदा दुर्दशा है उसके लिये वह खुद बड़े पैमाने पर जिम्मेदार है और उसकी इस हालत से उन दलों को सबक लेना चाहिये जो भाजपा के विरोध में तो हैं पर विपक्षी मत विभाजन के भी जिम्मेदार हैं।

कैंट थाने की पुलिस ने थामे तेज रफ्तार दौड़ रहे डंपर के पहिए, सीज किया– जुर्माना भी लगाया

गोरखपुर। शहर में बिना ड्राइविंग लाइसेंस के खतरनाक ढंग से गोलघर, शास्त्री चौक और विजय चौक जैसी व्यस्त सड़कों पर शुक्रवार शाम से ही तेज रफ्तरा डंपर दौड़ रही थी। अभियान चलाकर कैंट पुलिस ने चलते हुए 7 डंपर और एक पल्सर बाइक को पकड़ एमवी एक्ट की विभिन्न धाराओं में सीज कर दिया।

रविवार को कैंट थाने की पुलिस ने यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरूद्ध कार्रवाई की। डंफर के साथ ही एक पल्सर बाइक को भी पुलिस ने सीज किया।

कैंट थाना प्रभारी रणधीर मिश्रा ने बताया कि शहर की सड़कों पर खतरनाक ढंग से मिट्टी से भरे वाहन को बिना ढके ही चलाया जा रहा था। जिससे मिट्टी काफी दूर तक उड़ कर रोड पर चलने वाले आम जनमानस की आंखों में पड़ रही थी। इन वाहनों को रोकर कर चालकों से गाड़ी से संबंधित कागजात का मांगा गया तो नही दिखा सके।

उक्त वाहनों को मोटर व्हीकल एक्ट के विभिन्न धाराओ में सीज किया गया। बताया कि गर्मियों में लोग धूप और लपट से खुद को बचाते हुए चलते हैं। ऐसे में मिट्टी भरे डंपर से उड़कर नीचे गिरने वाली मिट्टी लोगों के लिए नुकसानदायक और जानलेवा भी हो सकती है।

षहर में कई जगहों पर डंफर की चपेट में आकर लोगों ने जान गंवाई है। यातायात नियमों का उल्लंघन रोकने के लिए शहर में पुलिस द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को शहर की सड़कों पर तेज रफ्तार में चलने वाले वाहनों के विरूद्ध कार्रवाई हुई।

इन वाहनों को किया गया सीज

वाहन संख्या – UP53JT3344 डंपर के चालक नारद पासवान पुत्र जगदीश पासवान निवासी बेलवार टोला करमहिया थाना खोराबार जनपद गोरखपुर ,

वाहन सं0 – UP53CT5672 डम्फर के चालक राजवीर यादव पुत्र राजकुमार यादव निवासी चिलविलवा थाना पिपराईच जनपद गोरखपुर (टीपर) ,

वाहन सं0 UP53DT6651 डाम्फर के चालक नवमी लाल पुत्र दुधनाथ निवासी नौरंगरिया थना निबूआ नौरंगिया जनपद कुशीनगर (डम्फर) ,

वाहन सं0 UP53HT7009 डम्फर के चालक दीपक यादव पुत्र विजेन्द्र यादव निवासी भगत चौराहा थाना रामगढ़ताल जनपद गोरखपुर ,

वाहन सं0 UP53FT7273 डम्फर के चलाक शैलेश यादव पुत्र अर्जुन यादव निवासी मोतिपाकड़ थाना हाटा जनपद कुशीनगर,

वाहन सं0 UP53HT0388 डम्फर के चालक बटोही पुत्र खदेरू निवासी बेलवा थाना कोठीबारी जनपद महराजगंज ,

वाहन सं0 UP91T3625 के चालक राजकुमार पुत्र मातीलाल निवासी ग्राम सुकुलपुरा महुयी थाना सिकरीगंज जनपद गोरखपुर ,

वाहन सं0 UP53EW 0519 पल्सर एनएस के चालक मो0 सज्जाद पुत्र खलील रहमान निवासी मिर्जापुर चरियारी बाबा के मजार के पास थाना राजघाट जनपद गोरखपुर।

राजस्थान से लाए रद्दी स्टांप को बनाते थे नकली– इस खास तकनीकी से गलाते, बनाते और बेच देते

गोरखपुर । फर्जी स्टांप में इस्तेमाल होने वाला सिल्वर राजस्थान से सस्ते दाम के स्टांप पेपर से निकाला जाता था। पुलिस की जांच में पता चला है कि यह गिरोह रद्दी के कम कीमत वाले स्टांप खरीदकर लाते थे और उसे पानी में कुछ देर तक डाल देते थे। गलने के बाद उसमें से सिल्वर निकाल लेते थे। फिर इसका ही इस्तेमाल करके नया नकली स्टांप पेपर तैयार करके बेचते थे। इन सबके पीछे एक और बात भी सामने आई है कि इनका नेटवर्क वहां भी है। वहां आम आदमी को एक निर्धारित संख्या में ही स्टांप पेपर मिलता है, और ये बहुतायत में लेकर आते थे। अब पुलिस इस धंधेबाजी में सभी बिंदुओं पर काम कर रही है।

40 साल से धंधे करने वाला कमरुद्दीन पहले भी स्टांप बनाता था, लेकिन उसकी करतूत आसानी से पकड़ में आ जाती थी। यही वजह है कि धंधा शुरू करने के कुछ साल बाद ही वह 1986 में दबोच भी लिया गया था। वह अपने समय में कम संख्या में ही स्टांप बनाता था, लेकिन जब उसका नाती साहेबजादे रसायन विज्ञान, कंप्यूटर और एप का माहिर हो गया, तो उसने इस नई तकनीक का इस्तेमाल करके स्टांप बाजार में उतार दिया।

उसने इस तरह का स्टांप तैयार कर दिया, जिसे पकड़ पाना आसान नहीं था। इसी का फायदा उठाते हुए कई साल तक धंधा करता रहा और मुनाफा कमाता रहा। पुलिस की जांच में एक बात और सामने आई कि फर्जी स्टांप बनाने और बेचने वाला कमरुद्दीन और उसका परिवार उतना मुनाफा नहीं कमा सका है, जितना बेचने वाले वेंडर कमा चुके हैं।

एक स्टांप तैयार करने में 50 रुपये खर्च आता था और 25 हजार रुपये कीमत के स्टांप को महज तीन सौ रुपये में ही बेच दिया करते थे। इससे छोटे दाम के स्टांप को और सस्ते में ही बेचता था। यही वजह है कि अवैध धंधा करने वाला मास्टरमाइंड कंगाल ही रह गया और वेंडर आलीशान इमारतों के मालिक बन बैठे।

खरीदने वाले को भले ही नहीं मालूम था, लेकिन वेंडरों को अच्छी तरह से मालूम है कि वह फर्जी स्टांप बेच रहे हैं। इसके पीछे वह मोटा मुनाफा कमाते थे। अगर वह असल स्टांप बेचते थे, चंद रुपये ही कमीशन के तौर पर पाते थे, जबकि नकली बेचने में पूरी आमदनी ही जेब में जा रही थी, और सरकार को आर्थिक चोट पहुंच रही थी।

नकली नोट की इंक कौन देता था, जांच शुरू

फर्जी स्टांप के बाद नकली नोट का मामला सामने आने के बाद पुलिस ने इसकी भी जांच शुरू कर दी है कि आखिर उसे इंक कहां से मिलती थी। पुलिस की अब तक की जांच में पता चला है कि वाटर प्रिंट करके वह अदृश्य से दिखने वाले सिक्योरिटी को बनाया करता था, लेकिन इंक आदि की जांच की जा रही है।

एसपी सिटी कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि 25 हजार रुपये कीमत तक के फर्जी स्टांप तैयार किए जाते थे। अधिकतम तीन सौ रुपये में ही स्टांप को बेच देते थे। इसमें ज्यादा मुनाफा वेंडर कमाते थे। फर्जी स्टांप तैयार करने के लिए इस्तेमाल होने वाले सिल्वर को यह लोग राजस्थान से स्टांप पेपर लाकर उसे पानी में डालकर निकालते थे। पुलिस गहराई से जांच कर रही है। जांच व साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बकरी चोरी करने का विवाद, बुजुर्ग का आरोप – सामूहिक दुष्कर्म हुआ, केस दर्ज

गोरखपुर। गोरखपुर के चौरीचौरा में 75 साल की बुजुर्ग महिला का आरोप सुनकर एक बारगी पुलिस के कान भी खड़े हो गए। महिला ने थाने में बताया कि उसके गांव के दो युवकों ने उसे झोपड़ी से खींचकर सामूहिक दुष्कर्म किया। आरोप पर यकीन करना तो मुश्किल था, लेकिन जिस तरह से बुजुर्ग बता रही थी, पुलिस ने भी केस दर्ज कर लिया।

लेकिन, जब सच्चाई की जांच की तो जो हकीकत सामने आई, वह और भी हैरान करने वाली है। पता चला कि झोपड़ी के बाहर बंधी बकरी खोलने के विवाद में महिला ने केस दर्ज कराया है। उसे ऐसा करने के लिए चुनावी रंजिश रखने वालों ने हवा दी है।

लेकिन, इन सबके बीच 75 साल की उम्र की महिला हकीकत जानने के बाद सबकी जुबां पर एक ही सवाल है कि इस उम्र में महिला को ऐसा नहीं करना चाहिए। चौरीचौरा थाना क्षेत्र के एक गांव की 75 वर्षीय विधवा ने गांव के ही दो युवकों पर गला दबाकर कर जान से मारने का प्रयास व दुष्कर्म का केस दर्ज कराया है।

पुलिस ने महिला की तहरीर पर केस दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी। महिला ने पुलिस को प्रार्थनापत्र देकर बताया कि बृहस्पतिवार की देर रात वह अपनी झोपड़ी में सोई थी। तभी गांव के दो युवक उसका गला दबाकर जान से मारने की कोशिश करने लगे। महिला ने गिड़गिड़ाते हुए अपनी जान की सलामति मांगी, तो दोनों युवकों ने उसके साथ दुष्कर्म किया।

महिला के प्रार्थनापत्र पर गांव के ही दो युवकों के खिलाफ दुष्कर्म, हत्या के प्रयास का केस दर्ज कर लिया है। पुलिस की मानें तो गांव में महिला जिसके घर की देखरेख करती है, उसकी आरोपियों से चुनावी रंजिश है। इसी बीच शुक्रवार की रात आरोपी शराब के नशे में जा रहे थे, और रास्ते में महिला की झोपड़ी के पास से बकरी खोलने लगे, महिला जग गई। उसने मना किया और विवाद होने के बाद केस दर्ज कराया है। एसपी नार्थ जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस ने तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। जांच व साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

574 गांवों की निकली खतौनी, गांव में जाकर रिपोर्ट लगा रहे लेखपाल– चूके तो होगी परेशानी

गोरखपुर । गोरखपुर में रियल टाइम खतौनी अपलोड करने में हुई गलतियों के संशोधन का अवसर आ गया है। तहसील कार्यालय से 574 राजस्व गांवों की खतौनियों का प्रिंट लेखपालों को दे दिया गया है। उन्हें निर्देश दिया गया है कि वे गांवों में जाएं और पूछताछ करके सही रिपोर्ट लगा दें।

लेखपालों की जांच में कोई गलती पकड़ी गई तो उनकी रिपोर्ट से संशोधन हो जाएगा। यदि गलती छूट गई तो एसडीएम न्यायालय में वाद दाखिल करना और कई साल तक भूस्वामी को मुकदमे का दर्द झेलना पड़ सकता है। यूपी भूलेख पोर्टल का सर्वर स्लो होने के कारण रियल टाइम खतौनी बनाने में कई बार अंतिम तिथि बढ़ाई गई।

जब सर्वर चला तो ऑपरेटरों ने जल्दी से कार्य करने की कोशिश की और इसमें खाताधारकों के नाम और अंश दर्ज करने में गलतियां दर्ज हो गई हैं, जबकि 40 प्रतिशत से खतौनियों में ही अंश निर्धारण हो पाया है। अब लेखपालों की रिपोर्ट के अनुसार गलतियों में सुधार होना है। इसके साथ ही वे भूमि की रजिस्ट्री के दस्तावेजों को देखकर अंश निर्धारण करेंगे। इसमें भी सभी एक खाते के सभी भू स्वामियों के दस्तावेज मिलने पर ही सही रिपोर्ट लगाई जा सकती है।

शहरी क्षेत्र में ज्यादातर ऐसे भू स्वामी हैं,

जिनका पता ठिकाना भी नहीं है। तहसील परिसर के अधिवक्ता अभिनव श्रीवास्तव ने कहा कि रियल टाइम खतौनी अच्छी व्यवस्था है। खतौनियों का प्रिंट लेखपालों को दिया गया है। लोगों को चाहिए कि यदि उनके क्षेत्र के लेखपाल गांवों में न गए हों तो खुद ही उनसे संपर्क करके अपनी खतौनी देख लें।

तहसील सदर में 650 राजस्व गांवों की खतौनियों को रियल टाइम बनाने का काम चल रहा है, जिसमें 86 गांवों की खतौनियों को पोर्टल पर दर्ज करने का काम अधूरा है। अब अंश निर्धारण पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन कई खतौनियों में ऐसे पेंच उलझे हैं कि उन्हें समझने में लेखपालों को पसीना आ रहा है।

लेखपाल संघ के जिलाध्यक्ष दिनेश कुमार पंकज ने बताया कि शहरी क्षेत्र में कई ऐसे प्लाट हैं, जिनके मालिकों को ढूंढ पाना मुश्किल काम है। उनके पड़ोसी भी नहीं बता पा रहे हैं कि वे कहां रहते हैं, जबकि रजिस्ट्री के दस्तावेज मिलने पर ही सही रिपोर्ट लगाई जा सकती है।

तहसीलदार विकास सिंह ने बताया कि यूपी भूलेख का सर्वर अब सही चल रहा है, और रियल टाइम खतौनी बनाने का काम तेजी से किया जा रहा है। 574 राजस्व गांवों की खतौनियों का प्रिंट संबंधित लेखपालों को दिया गया है। उन्हें निर्देश दिया गया है कि गांवों में जाकर खतौनियों की त्रुटियों को सही करने के साथ अंश निर्धारण करें।

लोहिया की धरती पर सपा का सूखा...

लड़ाई करीब, लेकिन जीत से रहे दूर, 1996 से आम चुनावों में नहीं मिली सफलता

अंबेडकरनगर। डॉ. राम मनोहर लोहिया की जन्मस्थली में ही समाजवादी पार्टी को जीत का इंतजार है। साल 1996 से आम चुनावों में पार्टी को सफलता नहीं मिली है। सपा रणनीतिकारों ने कई दांव आजमाए, लेकिन कारगर नहीं हुए। जिन प्रख्यात समाजवादी डॉ. राम मनोहर लोहिया के सिद्धांतों से प्रेरित होकर समाजवादी पर्टी का गठन हुआ उन्हीं की जन्मभूमि पर सपा को लोकसभा चुनाव में जीत का इंतजार है। पार्टी गठन के बाद हुए सात आम चुनावों में सपा चार बार दूसरे स्थान तक आई, लेकिन जीत नसीब नहीं हुई।

2004 के उपचुनाव में जरूर सपा को विजय मिली, लेकिन इसे बसपा प्रमुख द्वारा बार–बार जीत के बाद भी सीट छोड़ने की प्रतिक्रिया के तौर पर देखा गया। समाजवादी चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया की जन्मस्थली अकबरपुर है। यहीं से लोहिया के सिद्धांतों ने वैचारिक क्रांति की अलख जगाई। पूरी दुनिया में उनके समाजवादी आदर्श की गूंज हुई, लेकिन इन सबके बीच डॉ. लोहिया का नाम लेकर आगे बढ़ी समाजवादी पार्टी को अकबरपुर में ही आम चुनाव के सफर में एक भी जीत मयस्सर नहीं हो सकी।

वर्ष 1992 में गठन के बाद सपा ने पहला आम चुनाव वर्ष 1996 में लड़ा। तब अकबरपुर सुरक्षित संसदीय सीट पर पार्टी ने अयोध्या (तत्कालीन फैजाबाद) जनपद के कद्दावर दलित नेता अवधेश प्रसाद को टिकट दिया। डॉ. लोहिया की धरती पर सपा ने बड़े चेहरे को उतार कर मजबूत संदेश देने की कोशिश की। अवधेश प्रसाद चुनाव भी पूरी मजबूती से लड़े, लेकिन बसपा की जीत के बीच 24,567 मतों से पीछे रह गए। उन्हें 1,69,046 मतदाताओं का साथ मिला। हार के बाद भी सपा के लिए यहां एक सुखद स्थिति यह जरूर रही कि प्रत्याशी को कुल 27.12 प्रतिशत मत मिले जो पार्टी के कुल औसत मत 20.84 प्रतिशत से कहीं अधिक था।

लड़ाई करीब, लेकिन जीत से रहे दूर

वर्ष 1998 के लोकसभा चुनाव में सपा के डॉ. लालता प्रसाद कनौजिया 2,38,382 मत के साथ, वर्ष 1999 में राम पियारे सुमन 2,06,376 मत के साथ जबकि वर्ष 2004 के सामान्य चुनाव में सपा प्रत्याशी शंखलाल मांझी 2,66,750 मत के साथ दूसरे स्थान पर रहे।

इस चुनाव के बाद हुए परिसीमन में जिले की इकलौती सीट अकबरपुर सुरक्षित से बदलकर सामान्य श्रेणी में आ गई। नाम भी अंबेडकरनगर हो गया। सामान्य सीट पर हुए पहले चुनाव में भी सपा को जीत नहीं मिली। शंखलाल मांझी बतौर सपा प्रत्याशी 2,36,751 मत के साथ बसपा के राकेश पांडेय से 22,736 वोटों से पिछड़ गए। यह जरूर रहा कि इससे पहले के चुनाव परिणामों को शामिल किया जाए तो इस बार सबसे कम मत से सपा को हार मिली।

2014 में सपा ने जातीय समीकरणों को ध्यान में रखकर फिर से जोर लगाया। पूर्व मंत्री राम मूर्ति वर्मा को मैदान में उतारा, लेकिन वे तीसरे स्थान पर खिसक गए। वर्ष

2019 में सपा खुद यहां चुनाव नहीं लड़ी। गठबंधन के चलते यह सीट बसपा के खाते में चली गई थी। तब सपा के सहयोग से जीते सांसद रितेश पांडेय अब भाजपा से चुनाव लड़ रहे हैं, वहीं सपा से पूर्व मंत्री लालजी वर्मा मैदान में डटे हैं।

उपचुनाव ने दिया सहारा

सपा को आम चुनाव में जीत न मिलने के दर्द के बीच वर्ष 2004 के उपचुनाव में थोड़ी राहत मिली। हालांकि उसे सपा की जीत से ज्यादा बसपा प्रमुख मायावती द्वारा बार–बार यहां जीत के बाद सीट छोड़ने की प्रतिक्रिया के तौर पर देखा गया। बसपा प्रमुख यहां लगातार तीन बार सांसद चुनी गईं। सीट रखने की बजाय दो बार वे इसे छोड़ गईं। वर्ष 2002 में जिले की तत्कालीन जहांगीरगंज विधानसभा सीट पर जीत के बाद भी मायावती ने उसे अपने पास नहीं रखा।

नतीजा यह हुआ कि 2004 के आम चुनाव में भी जीत के बाद जब मायावती ने यह सीट छोड़ी तो उपचुनाव में सपा प्रत्याशी शंखलाल मांझी ने जीत दर्ज कर ली। उन्होंने बसपा के त्रिभुवन दत्त को हराया। सपा के साथ ऐसे में इसी एक उपचुनाव में यह सीट हाथ लग पाई।

विधानसभा में शानदार प्रदर्शन

लोकसभा चुनाव में भले ही सपा की हसरत पूरी नहीं हो पा रही, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में पार्टी ने जोरदार प्रदर्शन किया। पूरे प्रदेश में भाजपा की भले ही धमाकेदार जीत हुई, लेकिन अंबेडकरनगर में सपा का प्रदर्शन एकतरफा रहा। जलालपुर से राकेश पांडेय, टांडा से राममूर्ति वर्मा, आलापुर से त्रिभुवन दत्त, अकबरपुर से राम अचल राजभर और कटेहरी से लालजी वर्मा सपा के टिकट पर चुनाव लड़कर विधायक बने। वर्ष 2017 के चुनाव में भाजपा को टांडा और आलापुर में जीत मिली थी।

सपा ने वह दोनों सीटें भी छीन लीं। विधानसभा चुनाव में मिली इस अप्रत्याशित जीत के बूते ही सपा इस बार लोकसभा में परिवर्तन की उम्मीद लगाए है। यह बात अलग है कि सपा के कद्दावर विधायक राकेश पांडेय बीते दिनों पार्टी से बगावत कर राज्यसभा चुनाव में बीजेपी प्रत्याशी को वोट दे चुके हैं। उन्हीं के पुत्र रितेश भाजपा से चुनाव लड़ रहे हैं।

उपचुनाव में ही सांसद बने थे डॉ. लोहिया

डॉ. लोहिया वर्ष 1963 में फर्रुखाबाद सीट पर हुए लोकसभा उपचुनाव में करीब 58 हजार वोट से विजयी होकर सांसद बने थे। उनका जन्म 23 मार्च 1910 को अकबरपुर में हुआ था, जब वे ढाई वर्ष के थे तो माता चंदा का निधन हो गया। पालन पोषण परिवार की दाई सरयू देई ने किया।

पेशे से अध्यापक पिता हीरालाल उन्हें वर्ष 1918 में ही कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में लेकर गए थे, जिसके बाद डॉ. लोहिया ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे भारत छोड़ो आंदोलन में पहली बार 20 मई 1944 को गिरफ्तार हुए। राष्ट्रभक्ति उनमें इस कदर थी कि सरकार की कृपा पर पेरोल पर रिहा होने से इन्कार कर दिया था।

ऐसे मिली थी जीत

प्रत्याशी दल प्राप्त मत

डॉ. राम मनोहर लोहिया सोशलिस्ट पार्टी 1,07,816

डॉ. बीके केशकर कांग्रेस 50,528

भारत सिंह राठौर रिपब्लिकन पार्टी 5422

अवैध 4340

जीत का अंतर 57,288

बीपी की दवा का करते हैं सेवन तो गर्मी शुरू होने से पहले एक बार जरूर करा लेना चेकअप

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) गोरखपुर बाबा राघवदास मेडिकल कालेज जिला अस्पताल और निजी अस्पतालों के हृदय रोग विशेषज्ञों की ओपीडी में इन दिनों चक्कर कमजोरी बेहोशी जैसे लक्षणों वाले रोग ज्यादा संख्या में पहुंच रहे हैं। इनमें से 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के रोगियों की संख्या अधिक है। डाक्टरों ने बीपी की जांच की तो यह कम निकली।

संवाददाता, गोरखपुर। रुस्तमपुर की 67 वर्षीय शकुंतला को उच्च रक्तचाप (हाई बीपी) की दिक्कत है। ठंड में स्वजन ने डाक्टर को दिखाया तो उन्होंने दवा लिखी। शकुंतला पांच महीने से वही दवा खा रही थीं। पिछले सप्ताह उनको अचानक चक्कर आने लगा और शरीर में सुस्ती बढ़ी तो स्वजन ने डाक्टर से सलाह ली।

जांच में पता चला कि बीपी कम हो गई है। तत्काल उनकी डोज (खुराक) कम की गई। दो दिन बाद तबियत में सुधार होना शुरू हुआ। डाक्टर ने कहा कि ठंड में बीपी की दवा का डोज ज्यादा रखा जाता है, गर्मी में 20 प्रतिशत रोगियों का डोज कम हो जाता है। ऐसे में गर्मी की शुरुआत में एक बार जरूर चेकअप करा लेना चाहिए।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) गोरखपुर, बाबा राघवदास मेडिकल कालेज, जिला अस्पताल और निजी अस्पतालों के हृदय रोग विशेषज्ञों की ओपीडी में इन दिनों चक्कर, कमजोरी, बेहोशी जैसे लक्षणों वाले रोग ज्यादा संख्या में पहुंच रहे हैं। इनमें से 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के रोगियों की संख्या अधिक है। डाक्टरों ने बीपी की जांच की तो यह कम निकली। इसके बाद दवाओं का डोज चेक किया गया तो पता चला कि ठंड में बीपी को नियंत्रित करने के लिए बढ़ाई गई डोज ही गर्मी में भी रोगी ले रहे थे।

ठंड में सिकुड़ने लगती हैं नसें

ठंड में तापमान कम होने से नसें सिकुड़ने लगती हैं। इसकी वजह से बीपी बढ़ जाती है। इससे हृदय पर दबाव बढ़ जाता है। इस कारण हार्ट अटैक के मामले भी बढ़ जाते हैं। बीपी को नियंत्रित करने के लिए डाक्टर दवाओं की डोज बढ़ा देते हैं। गर्मी में पसीना निकलने के कारण बीपी में गिरावट आती है।

वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डा. दिनेश सिंह ने कहा कि हाई बीपी वाले रोगियों को ठंड और गर्मी में डाक्टर से जरूर जांच करानी चाहिए। तकरीबन 20 प्रतिशत रोगियों को ठंड में दी जाने वाली दवाओं का डोज गर्मी में कम किया जाता है। यदि चक्कर आए, सुस्ती हो, खड़े होने में दिक्कत हो, लेटे रहने का ही मन कर रहा हो तो एक बार बीपी चेक कराकर दवाओं की डोज फिर से निर्धारित करा लें।

रायबरेली लोकसभा: तो प्रियंका संभालेंगी मां सोनिया की विरासत

रायबरेली। सोनिया गांधी के राज्यसभा चले जाने के बाद रायबरेली सीट पर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। लेकिन सूत्रों के अनुसार यह करीब–करीब साफ हो गया है कि प्रियंका गांधी ही इस सीट से प्रत्याशी होंगी। गांधी परिवार के गढ़ रायबरेली में कांग्रेस महासचिव प्रियंका वाड्रा को चुनावी समर में उतारने की मांग तेज हो गई है। पार्टी सूत्रों के अनुसार हाईकमान से प्रियंका को चुनाव लड़ाने की हरी झंडी भी मिल चुकी है। सिर्फ औपचारिक घोषणा बाकी है। इस संकेत के बाद कांग्रेसी अंदर ही अंदर खुश हैं। उत्तर प्रदेश की इकलौती सीट को किसी भी हाल में कांग्रेस गंवाने के मूड में नहीं है। सोनिया के राज्यसभा में जाने के बाद यह सीट खाली है। हमेशा सबसे पहले प्रत्याशी मैदान में उतारने वाली कांग्रेस अबकी चुप्पी साधे है। ग्राउंड रिपोर्ट की सच मानें तो लोगों में यही चर्चा है कि गांधी परिवार से प्रत्याशी उतरने के बाद ही कांग्रेस इस सीट को बचा सकती है। प्रियंका के मैदान में आने से प्रदेश में कांग्रेस की निश्चित ही संजीवनी मिलेगी, लेकिन भाजपा से प्रत्याशी घोषित नहीं होना कहीं न कहीं कांग्रेस को अखर रहा है।

पांच साल बनाए रखी दूरी, अब मनाना चुनौती

वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव जीतने के बाद रायबरेली के लोगों से दूरी बनाए रखना गांधी परिवार को अब मुश्किल में डाल सकती है। बीते पांच वर्षों में सोनिया गांधी का कई बार कार्यक्रम आया, लेकिन फिर निरस्त भी हो गया।

प्रियंका आएंगी तो भाजपा लगा सकती है स्थानीय पर दांव

रायबरेली संसदीय सीट पर भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी तय करने के लिए एक दूसरे का मुंह देख रहे हैं। लोगों में चर्चा है कि यदि प्रियंका चुनाव में उतरती हैं तो भाजपा स्थानीय प्रत्याशी पर दांव लगा सकती है। दिनेश प्रताप

लापता छात्र का 40 दिन बाद भी सुराग न लगा सकी पुलिस

सदमे से पिता ने तोड़ा दम थाने में फफक पड़ा भाई

आगरा। थाना सदर की पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज करने के 40 दिन बाद बताया एत्मादपुर से जांच होगी। ये मामला पुलिस के सीमा विवाद में पड़ा तो घरवालों के होश उड़ गए। थाने पहुंचा छोटा भाई फफक कर रो पड़ा, लेकिन उसे सहारा देने वाला कोई न था। आगरा कमिश्नरेट बनने के बाद भी पुलिस का ढर्रा नहीं बदल सका है। लापता छात्र के बारे में पुलिस 40 दिन बाद भी सुराग नहीं लगा सकी। बेटे से मिलने की आस में ट्रांसपोर्टर पिता ने दम तोड़ दिया।

अब थाना सदर की पुलिस ने परिजन को 40 दिन बाद यह कहकर लौटा दिया है कि बेटे की आखिरी लोकेशन एत्मादपुर में मिली थी। अब जांच एत्मादपुर पुलिस करेगी। उनका कोई लेना–देना नहीं है। यह सुनकर छात्र का भाई फफक कर रो पड़ा।

सदर के रोहता, राधे गार्डन के रहने वाले विपिन मिश्रा ने बताया कि उनके चाचा प्रदीप मिश्रा ट्रांसपोर्टर थे। करीब डेढ़ साल से कैंसर से जूझ रहे थे। उनका इकलौता बेटा रितिक मिश्रा (24) कासगंज के एसएन कॉलेज से बीएससी कर रहा था। 16 फरवरी को प्रयोगात्मक परीक्षा देने गया था। दोपहर ढाई बजे कासगंज से आगरा के लिए बस में सवार हुआ था।

रात 8 बजे चचेरी बहन से उसकी फोन पर बात हुई। उसने बताया कि एत्मादपुर तक आ गया है। जल्दी घर पहुंच जाएगा। इसके बाद परिवार में किसी की रितिक से बात नहीं हुई। परिजन 17 फरवरी को पहले एत्मादपुर थाने गए। पुलिस ने सदर थाने भेज दिया। थाना सदर में गुमशुदगी दर्ज करके जांच बुंदूकटरा चौकी पर भेज दी। इसके बाद परिजन पुलिस चौकी के चक्कर काटते रहे और पुलिस टहलाती रही। विपिन ने बताया कि 28 मार्च को चाचा ने दम तोड़ दिया।

आखिरी समय वह सिर्फ एक ही सवाल पूछते थे, रितिक कब आएगा। अब चौकी प्रभारी बुंदूकटरा ने पीड़ित परिवार को दो टूक जवाब दे दिया है कि छात्र की आखिरी लोकेशन एत्मादपुर में मिली थी। उन्होंने जांच एत्मादपुर थाने भेज दी है। परिजन ने एत्मादपुर थाने में संपर्क किया तो पुलिस ने जानकारी होने से ही मना कर दिया।

लोकसभा चुनाव 2024

सलीम शेरवानी से बोले शिवपाल यादव– बदायूं से मैं लड़ूं या बेटा...

आप करें सहयोग

बदायूं। लोकसभा चुनाव को लेकर सपा से रूठे नेताओं को मनाने की कवायद हो रही है। शिवपाल सिंह यादव ने बदायूं से पांच बार के सांसद रहे सलीम शेरवानी से सहयोग मांगा है। दोनों नेताओं के बीच फोन पर बातचीत हुई है। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय महासचिव पद से इस्तीफा दे चुके सलीम शेरवानी को अपने पक्ष में करने के लिए बदायूं से सपा प्रत्याशी शिवपाल सिंह ने बृहस्पतिवार को उनसे फोन पर बात की। उन्होंने शेरवानी से कहा, चुनाव मैं लड़ूं या मेरा बेटा... आप सहयोग करें। शेरवानी ने इस मुद्दे पर ईद के बाद समर्थकों से विचार–विमर्श करने के बाद ही कोई निर्णय लेने की बात कही। टिकट न मिलने से नाराज पूर्व सांसद सलीम इकवाल शेरवानी के सपा के राष्ट्रीय महासचिव पद से इस्तीफा देने के बाद से ही सियासी समीकरण साधने के लिए शिवपाल सिंह यादव उन्हें मना लेने की बात कह रहे हैं। चूंकि सलीम शेरवानी प्रयागराज में हैं, इसलिए शिवपाल से उनकी मुलाकात नहीं हो पाई। इस बीच शेरवानी ने राजनीति से सन्यास लेने की घोषणा भी कर दी।

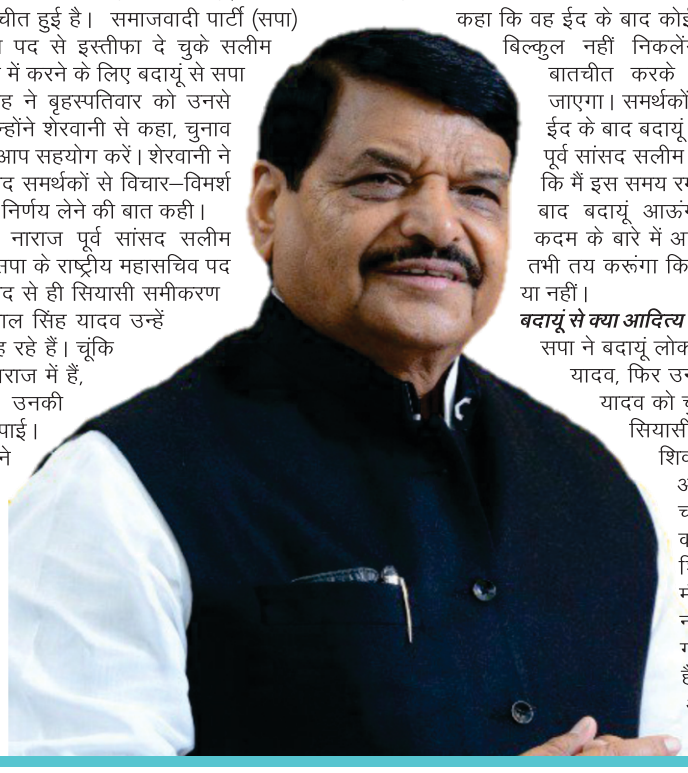

ईद के बाद लेंगे फैसला

बृहस्पतिवार को सलीम शेरवानी ने अमर उजाला से बातचीत में कहा कि बुधवार को शिवपाल सिंह यादव का फोन आया था। उन्होंने कहा कि वह लड़ें या उनका बेटा लड़े, आप मदद करें। आपने शिवपाल सिंह को क्या आश्वासन दिया के सवाल पर सलीम शेरवानी ने कहा कि वह ईद के बाद कोई फैसला करेंगे। ईद तक बिल्कुल नहीं निकलेंगे। अपने समर्थकों से बातचीत करके ही कोई निर्णय लिया जाएगा। समर्थकों से बातचीत के लिए वह ईद के बाद बदायूं आएंगे।

पूर्व सांसद सलीम इकबाल शेरवानी ने कहा कि मैं इस समय रमजान में व्यस्त हूं। ईद के बाद बदायूं आऊंगा। सियासत में अगले कदम के बारे में अपनों से मशविरा करूंगा। तभी तय करूंगा कि सपा का प्रचार करना है या नहीं।

बदायूं से क्या आदित्य लड़ेंगे चुनाव?

सपा ने बदायूं लोकसभा सीट से पहले धर्मेंद्र यादव, फिर उन्हें हटाकर शिवपाल सिंह यादव को चुनाव मैदान में उतारा है। सियासी हल्कों में चर्चा है कि शिवपाल यहां से अपने बेटे आदित्य को चुनाव लड़ाना चाहते हैं।

कार्यकर्ता सम्मेलन में शिवपाल यादव की मौजूदगी में आदित्य के नाम पर प्रस्ताव भी लाया गया। इससे माना जा रहा है कि सपा बदायूं से अपना प्रत्याशी बदल सकती हैं।

रेलवे ने 10 घंटे में बनाया 100 मीटर पुल

मुरादाबाद। रेलवे ने दस घंटे के भीतर अंग्रेजों के समय का बना पुल हटा 100 मीटर लंबा नया ब्रिज तैयार कर दिया। यह पुल मुरादाबाद रेल मंडल के चंदौसी–आंवला रेलखंड पर बिशारतगंज–आंवला स्टेशनों के बीच बनाया गया है। इस पुल के तैयार होने से ट्रेनों की गति बढ़ जाएगी। रेलवे के इंजीनियरिंग कौशल ने एक बार फिर निर्माण से जुड़े कई विभागों को आईना दिखाया है। महज 10 घंटे में अंग्रेजों के समय का पुराना पुल हटाकर 100 मीटर लंबा नया रेलवे पुल तैयार कर दिया। यह पुल मुरादाबाद रेल मंडल के चंदौसी–आंवला रेलखंड पर बिशारतगंज–आंवला स्टेशनों के बीच बनाया गया है। पुराना पुल हाई स्पीड ट्रेनों के लिहाज से जर्जर हो चुका था। यहां से ट्रेनें महज 20 किमी प्रतिघंटा की गति से गुजर रही थीं। रेलवे ने मुख्यालय से अनुमति लेकर पुराने पुल को हटाकर नया पुल स्थापित करने के लिए ब्लॉक लिया। इसके कारण सात ट्रेनें भी प्रभावित हुईं। पुराने पुल को हटाने का काम बृहस्पतिवार सुबह सुबह सात बजे शुरू कर दिया गया। यह शाम 4:30 बजे तक पूरा होना था लेकिन आधा घंटा लेट हो गया। शाम पांच बजे तक रेलवे ने नया पुल बनाकर तैयार कर दिया। 18–18 मीटर के अंतर से पांच स्थानों पर नए गर्डर स्थापित किए गए। नया रेलवे ट्रैक बिछाया गया। शाम सवा पांच बजे के बाद पहली ट्रेन धीमी गति से गुजारी गई। इसके बाद पुल को 100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से ट्रेनों के गुजरने के लिए खोल दिया गया। रेलवे के इंजीनियरों का कहना है कि नई पटरियां व स्लीपर ज्यादा वजन के हैं। इससे ट्रेनों को तेज गति से गुजरने में दिक्कत नहीं होगी। मुरादाबाद से बरेली के बीच यात्रा में कम समय लगेगा।

रेलवे पहले भी चंद घंटों में स्थापित कर चुका है पुल

रेलवे ने बेहतरीन इंजीनियरिंग का यह कार्य पहली बार नहीं किया है। साल भर पहले दलपतपुर–रामपुर के बीच बरसाती नदी पर 100 साल पुराना पुल हटाकर नया पुल बनाया गया था। इस पुल की लंबाई 132 मीटर थी। पुराना पुल हटाकर नया पुल स्थापित करने में रेलवे को 14 घंटे का समय लगा था। 300 से ज्यादा कर्मचारियों की मेहनत इसमें लगी थी। विभागीय जानकारों का कहना है कि रेलवे ने यह तकनीकी जापान के इंजीनियरों से सीखी है।

ये ट्रेनें रहलं प्रभावित

(04366–65) बरेली–मुरादाबाद–बरेली पैसेंजर, (04377–78) बरेली–अलीगढ़–बरेली पैसेंजर चार अप्रैल को रद्द रही। (04303) बरेली–दिल्ली पैसेंजर चार अप्रैल को मुरादाबाद से चलाई गई। (15529) सहरसा–आनंद विहार एक्सप्रेस तीन अप्रैल को चंदौसी न होकर बरेली–रामपुर होकर मुरादाबाद पहुंची। (12035) टनकपुर–दिल्ली एक्सप्रेस चार अप्रैल को दो घंटे देरी से चली। (12036) दिल्ली–टनकपुर एक्सप्रेस चार अप्रैल को साढ़े चार घंटे देरी से चली।

पुलिस का कारनामा

छेड़छाड़ की शिकायत पर पिता व चाचा को ही बना दिया 'गुंडा', दहशत में परिजनों ने घर छोड़ा

कानपुर। दबंगों ने युवती से छेड़खानी व परिजनों से मारपीट की। पीड़ित परिवार थाने में शिकायत करने पहुंचा तो पुलिस ने आरोपियों पर कार्रवाई करने के बजाय युवती के पिता व चाचा पर ही गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर दी। कानपुर में दबंगों ने सरेराह युवती से छेड़खानी करने के साथ मोबाइल से फोटो खींची। युवती और उसके परिजनों ने विरोध किया तो दबंगों ने घर में घुसकर मारपीट की। थाने में शिकायत करने पर पुलिस ने आरोपियों पर कार्रवाई करने के बजाय युवती के पिता और चाचा पर ही गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर दी। इससे दहशत में आए परिजन घर में ताला लगाकर पलायन कर गए हैं। पीड़िता ने पुलिस कमिश्नर से न्याय की गुहार लगाई है। सीपी ने हनुमंत विहार थाने में एफआईआर दर्ज करने के साथ ही एसीपी को जांच के आदेश दिए हैं। हनुमंत विहार निवासी ऑटो चालक की बेटी ने बताया कि मोहल्ले का रहने वाला अंकुश सविता अपने साथियों संग मिलकर छेड़खानी और अश्लील हरकतें करता है। बीते 24 सितंबर की शाम करीब चार बजे बाजार से लौटते वक्त अंकुश ने उसकी चुन्नी खींच ली। उसका फोटो खींचकर मोबाइल नंबर मांगने लगा। विरोध पर तेजाब से नहलाने और परिजनों को जान से मारने की धमकी दी। थाने में शिकायत करने पर 26 सितंबर को अंकुश ने साथियों संग गाली गलौज की। जब उसके पिता इसकी शिकायत लेकर थाने पहुंचे तो पुलिस ने पिता और चाचा पर ही गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर दी।

28 मार्च को अंकुश ने दोबारा अश्लील इशारे किए। विरोध करने पर अंकुश ने भाइयों अरविंद, अजय, सुरेंद्र तथा भांजे अर्पित, नीरज और साथी गुड्डन, बीनू ठाकुर, अंकित, भाभी गुड़िया व प्रिया के साथ मिलकर घर में हमला कर दिया। मारपीट के साथ घर के बाहर खड़े ऑटो में भी तोड़फोड़ की। सूचना पर फोर्स संग मौके पर पहुंचे दरोगा चंद्रशेखर मिश्रा के सामने भी आरोपियों ने मारपीट की।

इसके बाद भी हनुमंत विहार पुलिस ने एफआईआर नहीं दर्ज की। आरोप है कि अंकुश और उसके साथी दरोगा की सह पर आए दिन गाली गलौज के साथ ही मारने की धमकी दे रहे हैं। दहशत में आए परिजन घर में ताला लगाकर रिश्तेदारों के यहां रह रहे हैं। इन लोगों ने गेट का ताला भी काट दिया है।

पीड़िता की तहरीर पर नौ नामजद समेत 19 के खिलाफ छेड़खानी, घर में घुसकर मारपीट, तोड़फोड़, धमकी समेत अन्य गंभीर धाराओं में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। मामले की जांच एसपीसी से कराई जाएगी। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। – रविंद्र कुमार, डीसीपी साउथ

मुलायम सिंह यादव का वो पैंतरा...

जिसकी वजह से भाजपा–बसपा की कभी न हो सकी मैनपुरी सीट, मोदी लहर भी न आई काम

वर्ष 2004 में मुलायम सिंह यादव ने मैनपुरी लोकसभा सीट जीतकर इस्तीफा दे दिया। यहां से उपचुनाव में उन्होंने अपने भतीजे धर्मेंद्र यादव को प्रत्याशी बनाया। धर्मेंद्र यादव ने इस चुनाव में 3,48,999 मत प्राप्त करते हुए बसपा के अशोक शाक्य को 1,79,713 मतों से पराजित किया। वर्ष 2009 में जब लोकसभा चुनाव हुआ तो प्रदेश में बसपा की सरकार थी। मुलायम को पता चला कि मैनपुरी में बसपा कुछ गड़बड़ करा सकती है। ऐसे में मुलायम लसह 2009 के आम चुनाव में खुद ही प्रत्याशी के रूप में मैदान में आए और उन्होंने बसपा के विनय शाक्य को पराजित कर 1,73,069 मतों से जीत दर्ज की।

आगरा। मैनपुरी यानि मुलायम सिंह यादव का गढ़। यहां लोकसभा चुनाव में जीत के लिए भाजपा और बसपा ने जाने कितने पापड़ बेले, लेकिन जीत का स्वाद न चख सके। इसके पीछे की आखिर वजह क्या रही। सपा नेता मुलायम सिंह यादव का जन्म भले ही इटावा की धरती पर हुआ हो, लेकिन वो अपनी कर्मभूमि मैनपुरी की जनता के मन को अच्छी तरह से जानते थे। जब भी उन्हें मैनपुरी सीट पर खतरा दिखाई दिया तो वे स्वयं ही चुनावी मैदान में कूद पड़े। अपने खुद के भतीजे और पौत्र की रिकॉर्ड जीत के बाद भी उन्होंने मैनपुरी से उनकी टिकट काटकर चुनाव लड़ा।

2004 में जीत के बाद दिया था यहां से इस्तीफा

वर्ष 2004 में मुलायम सिंह यादव ने मैनपुरी लोकसभा सीट जीतकर इस्तीफा दे दिया। यहां से उपचुनाव में उन्होंने अपने भतीजे धर्मेंद्र यादव को प्रत्याशी बनाया। धर्मेंद्र यादव ने इस चुनाव में 3,48,999 मत प्राप्त करते हुए बसपा के अशोक शाक्य को 1,79,713 मतों से पराजित किया। वर्ष 2009 में जब लोकसभा चुनाव हुआ तो प्रदेश में बसपा की सरकार थी। मुलायम को पता चला कि मैनपुरी में बसपा कुछ गड़बड़ करा सकती है। ऐसे में मुलायम सिंह 2009 के आम चुनाव में खुद ही प्रत्याशी के रूप में मैदान में आए और उन्होंने बसपा के विनय शाक्य को पराजित कर 1,73,069 मतों से जीत दर्ज की।

पौत्र तेजप्रताप सिंह यादव को चुनाव मैदान में उतारा

वर्ष 2014 के आम चुनाव में जीत के बाद मुलायम सिंह ने फिर से मैनपुरी सीट से इस्तीफा दे दिया। इस बार उन्होंने अपने पौत्र तेजप्रताप सिंह यादव को मैनपुरी सीट से प्रत्याशी बनाया। तेज प्रताप यादव ने इस चुनाव में रिकॉर्ड 6,53,786 मत प्राप्त किए। इस चुनाव में तेज प्रताप ने भजपा के प्रेम सिंह को 3,21,149 मतों से पराजित किया। वर्ष 2019 में प्रदेश में भाजपा की सरकार थी। मुलायम समझ गए मैनपुरी में कुछ गड़बड़ हो सकता है। ऐसे में उन्होंने 2019 के चुनाव में तेजप्रताप की टिकट कटवा दी और स्वयं प्रत्याशी बन गए। यह चुनाव काफी रोमांचक रहा। इस चुनाव में मुलायम सिंह यादव को 94,389 मतों से जीत मिली।

कांग्रेस के घोषणा पत्र में 5 न्याय 25 गारंटी

400 रु. मजदूरी, गरीब महिलाओं को सालाना 1 लाख MSP कानून और जाति जनगणना का वादा

लोकसभा चुनाव का बिगुल बजने के बाद से सभी पार्टियों ने लोगों से वादों की झड़ी लगानी शुरू कर दी है। कांग्रेस ने भी चुनावी रैलियों में लोगों से कई वादे किए हैं। इस बीच कांग्रेस ने अपना घोषणापत्र जारी कर दिया है। अध्यक्ष खरगे सोनिया गांधी और राहुल गांधी ने आज इसे जारी किया। आखिर कांग्रेस कौन-कौन सी गारंटियां दी हैं आइए जानें।

कांग्रेस ने जारी किया घोषणापत्र

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी ने शुक्रवार (5 अप्रैल) को लोकसभा चुनाव 2024 के लिए दिल्ली में AICC मुख्यालय में अपना घोषणापत्र जारी किया। इस दौरान पार्टी अध्यक्ष खड़गे, सोनिया, राहुल और मेनिफेस्टो कमेटी के अध्यक्ष पी. चिदंबरम मौजूद रहे। कांग्रेस पार्टी ने शुक्रवार (5 अप्रैल) को लोकसभा चुनाव 2024 के लिए दिल्ली में AICC मुख्यालय में अपना घोषणापत्र जारी किया। इस दौरान पार्टी अध्यक्ष खड़गे, सोनिया, राहुल और मेनिफेस्टो कमेटी के अध्यक्ष पी. चिदंबरम मौजूद रहे। लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने शुक्रवार को 48 पेज का घोषणा पत्र जारी किया। दिल्ली में कांग्रेस मुख्यालय में सोनिया, राहुल, खड़गे और मेनिफेस्टो कमेटी के अध्यक्ष पी चिदंबरम ने 5 न्याय और 25 गारंटी का ऐलान किया।

पार्टी के घोषणा पत्र में मजदूरी 400 रुपए दिन करने, गरीब परिवार की महिला को साल में 1 लाख रुपए देने, MSP को कानून बनाने और जाति जनगणना कराने का जिक्र है। कांग्रेस ने अपने मेनिफेस्टो में युवा, महिला, मजदूर और किसान पर फोकस किया है। इन सभी वर्गों के लिए अलग-अलग तरह की स्कीम्स का वादा किया गया है। पार्टी ने कहा है कि उसका घोषणा पत्र वर्क, वेल्थ और वेलफेयर पर आधारित है। यहां वर्क के मायने रोजगार, वेल्थ के मायने आमदनी और वेलफेयर के मायने सरकारी स्कीम्स के फायदे दिलाना है।

5 न्याय से हर वर्ग को फायदा मिलेगा

खड़गे ने कहा कि हमारा यह घोषणापत्र देश के राजनीतिक इतिहास में 'न्याय का दस्तावेज' के रूप में याद किया जाएगा। राहुल गांधी के नेतृत्व में चलाई गई भारत जोड़ो न्याय यात्रा यात्रा के दौरान पांच स्तंभों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

यात्रा के दौरान युवा न्याय, किसान न्याय, नारी न्याय, श्रमिक न्याय और हिसदारी न्याय की घोषणा की गई थी। हमने हर जगह इन्हीं न्याय की बात कही थी। इन 5 न्याय के अंदर 25 गारंटियां शामिल हैं, जिससे हर वर्ग को फायदा मिलेगा।

मोदी मणिपुर जाने से डरते हैं

खड़गे ने कहा कि हम डरने वाले नहीं है, क्योंकि हम उसूलों वाले लोग हैं। हमारे नेता राहुल और सोनिया के पास डर नाम की चीज नहीं है। नरेंद्र मोदी देश-विदेश के कई दौरे किए, लेकिन वो मणिपुर नहीं गए। मैं जानना चाहता हूं कि जब हमारे नेता राहुल मणिपुर जा सकते हैं तो नरेंद्र मोदी क्यों नहीं जा सकते? मुझे पता है कि मोदी मणिपुर जाने से डरते हैं। डरे हुए आदमी कभी देश नहीं चला सकते।

भाजपा का केवल एक काम है कि चंदा दो और ठेका लो

खड़गे ने कहा कि हम घर-घर जाएंगे। लोगों से मिलकर भाजपा की तरफ से किए जा रहे गलत कामों के बारे में बातएंगे। भाजपा का केवल एक काम है कि चंदा दो और ठेका लो। भाजपा पार्टी में करप्ट लोग हैं, लेकिन वो हमें बदनाम कर रहे हैं। जब नेता हमारी पार्टी में रहते हैं तो वो कहते हैं कि कांग्रेस नेता भृष्ट हैं, लेकिन जैसे ही वो उनके पास जाते हैं, उनके सारे पाप धुल जाते हैं।

चुनाव में समान अवसर नहल है

मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि आज विपक्षी नेताओ को बंद किया जा रहा है। चुनाव में समान अवसर नहीं हैं। हमारी पार्टी के ऊपर 3500 करोड़ से ज्यादा की पेनल्टी लगाई है। यह आज हमारे ऊपर हो रहा है और कल मीडिया के ऊपर होगा। इसलिए देश और संविधान को बचाना है। इस देश से मोदी को हटाना जरूरी है।

खड़गे ने कहा- मोदी ने गाली देने के अलावा कोई काम नहीं किया

पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जिस देश में एक सुई नहीं बनती थी, उस देश में इंदिरा और नेहरू ने रॉकेट बनाने का काम किया है। लेकिन नरेंद्र मोदी ने इस देश में गाली देने के अलावा कोई काम नहीं किया है।

कांग्रेस के न्यायपत्र की 10 बड़ी बातें...

कांग्रेस राष्ट्रव्यापी आर्थिक-सामाजिक जाति जनगणना करवाएगी। इसके माध्यम से कांग्रेस जातियों, उपजातियों और उनकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति का पता लगाएगी। कांग्रेस शिक्षा एवं नौकरियों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को मिलने वाले 10 आरक्षण को बिना किसी भेदभाव के सभी जाति और समुदाय के लोगों के लिए लागू कराएगी।

कांग्रेस पार्टी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और गरीब सामान्य वर्ग को मिलने वाले आरक्षण पर 50 का कैप हटाएगी। कांग्रेस अनुसुचित जाति, अनुसुचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित सभी रिक्त पदों को 1 साल के भीतर भरेगी।

वरिष्ठ नागरिकों, विधवाओं और दिव्यांगों के लिए पेंशन में केंद्र सरकार का योगदान महज 200-500 रुपए प्रति महीने है। कांग्रेस पेंशन की इस राशि को बढ़ाकर न्यूनतम 1,000 रुपए प्रति माह करेगी।

कांग्रेस 2025 से महिलाओं के लिए केंद्र सरकार की आधी (50 प्रतिशत) नौकरियां आरक्षित करेगी। कांग्रेस यह सुनिश्चित करेगी कि उच्च पदों जैसे, न्यायाधीशों, सरकार के सचिवों, उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारियों, कानून अधिकारियों और बोर्ड के निदेशकों पर अधिक महिलाओं की नियुक्ति हो।

कांग्रेस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुसार सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी गारंटी देगी।

कृषि लागत एवं मूल्य आयोग को एक वैधानिक निकाय बनाया जाएगा।

कांग्रेस आपको भय से मुक्ति का वादा करती है।

कांग्रेस मीडिया की पूर्ण स्वतंत्रता सहित भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बहाल करने का वादा करती हैं।

कांग्रेस मानहानि के जुर्म को अपराधमुक्त करने और कानून द्वारा, नागरिक क्षति के माध्यम से त्वरित उपाय प्रदान करने का वादा करती हैं।

कांग्रेस इंटरनेट के मनमाने और अंधाधुंध निलंबन को समाप्त करने का वादा करती है।

घोषणापत्र में महिलाओं को 1 लाख सालाना और 30 लाख नौकरियों की बात

कांग्रेस के न्याय पत्र में कहा गया है कि अगर केंद्र में कांग्रेस की सरकार आती है तो खाली पड़े 30 लाख पदों की भर्ती की जाएगी। गरीब परिवार की महिलाओं को एक लाख रुपए सालाना दिया जाएगा। जाति जनगणना होगी, डैच पर कानून बनेगा। घोषणापत्र में मनरेगा मजदूरी 400 रुपए, जांच एजेंसियों का दुरुपयोग रोकने और च्डस्। कानून में बदलाव का ऐलान किया गया है। साथ ही सच्चर कमेटी की सिफारिशों को लागू करने की भी बात कही गई है।

14 मार्च को राहुल ने पांच गारंटियों का ऐलान किया था

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पिछले महीने ही महाराष्ट्र में समाप्त हुई थी। इस दौरान 14 मार्च को राहुल ने अपने ग अकाउंट पर 5 गारंटियां दीं थी। राहुल ने कहा कि स्वामीनाथन आयोग के तहत किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (डैच) देंगे। साथ ही स्थायी कृषि ऋण माफी आयोग बनाएंगे।

कांग्रेस की किसानों को 5 गारंटियां

- MSP को स्वामीनाथन आयोग के फार्मूले के तहत कानूनी दर्जा देने की गारंटी।
- किसानों के ऋण माफ करने और ऋण माफी की राशि निर्धारित करने के लिए एक स्थायी 'कृषि ऋण माफी आयोग' बनाने की गारंटी।
- बीमा योजना में परिवर्तन कर फसल का नुकसान होने पर 30 दिनों के भीतर सीधे बैंक खाते में भुगतान सुनिश्चित करने की गारंटी।
- किसानों के हित को आगे रखते हुए एक नई आयात-निर्यात नीति बनाने की गारंटी।
- कृषि सामग्रियों से GST हटा कर किसानों को GST मुक्त बनाने की गारंटी।

सपा ने चला ऐसा दांव, मुस्लिम-दलित समीकरण के सहारे जीत की आस

मेरठ। अखिलेश यादव ने चर्चित मेरठ लोकसभा सीट पर ऐसा दांव चला है कि प्रत्याशी सुनीता वर्मा को दलित-मुस्लिम समीकरण के सहारे जीत की आस है। मेरठ में सपा प्रत्याशी सुनीता वर्मा को मुस्लिम-दलित समीकरण के सहारे जीत की आस है। उनको टिकट मिलने की एक बड़ी वजह यह समीकरण भी है। दरअसल, इस सीट पर नौ लाख से भी ज्यादा दलित-मुस्लिम बताए जाते हैं, जो करीब 50 प्रतिशत हैं। महापौर चुनाव में भी सुनीता वर्मा इसी समीकरण से जीत हासिल कर पाई थीं।

सपा-कांग्रेस गठबंधन की मेरठ-हापुड़ लोकसभा सीट से प्रत्याशी सुनीता वर्मा का राजनीतिक सफर डेढ़ दशक पहले जिला पंचायत सदस्य के तौर पर शुरू हुआ था। 2017 में भाजपा की कांता कर्दम को 29 हजार 582 वोटों से हराकर बसपा के टिकट पर लड़ीं सुनीता वर्मा महापौर बनी थीं। सुनीता वर्मा को दो लाख 34 हजार 817 वोट मिले थे, जबकि कांता कर्दम को दो लाख 5235 वोट मिले। बाद में योगेश वर्मा और सुनीता वर्मा ने सपा का दामन थाम लिया था। यूपी में विपक्षी सरकार में तमाम परेशानियों के बावजूद उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। उनके पति योगेश वर्मा 2007 में बसपा के टिकट पर हस्तिनापुर सीट से विधायक बने थे। 2012 में बसपा से टिकट कटा तो योगेश बगावत कर पीस पार्टी से मैदान में कूद पड़े। उन्हें प्रभुदयाल वाल्मीकि से हार का सामना करना पड़ा। 2017 में सुनीता वर्मा मेरठ शहर से महापौर चुनी गईं। 2022 में योगेश फिर हस्तिनापुर से विधायक का चुनाव लड़े, मगर दिनेश खटीक से हार गए।

सुनीता को लड़ाएंगे मजबूत चुनाव: काजला

कांग्रेस जिला अध्यक्ष अवनीश काजला ने कहा कि पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी को मजबूत जीत दिलाने का संकल्प लिया है। नामांकन में शहर अध्यक्ष जाहिद अंसारी, प्रवक्ता हरिकिशन अंबेडकर, रंजन शर्मा, डॉ. अशोक आर्य, संजय कटारिया, रीना शर्मा, रविन्द सिंह, रोबिन नाथ गोलू, शिव कुमार शर्मा, सरताज अहमद, नईम राणा, राकेश मिश्रा, यासर सैफी मौजूद रहे।

जयंत चौधरी ने एक्स पर ली चुटकी

बार-बार प्रत्याशियों के बदले जाने और उनका टिकट काटे जाने को लेकर जयंत चौधरी ने एक्स अकाउंट पर चुटकी ली है। उन्होंने एक पोस्ट करते हुए लिखा कि विपक्ष में किस्मत वालों को ही कुछ घंटों के लिए लोकसभा प्रत्याशी का टिकट मिलता है! और जिनका टिकट नहीं कटा, उनका नसीब।

उमेश पाल हत्याकांड: 'इस बार नही मार पाए तो मुंह मत दिखाना'

माफिया अतीक के बेटे अली ने शूटरों से कहा था

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के बेटे अली अहमद के खिलाफ उमेश पाल हत्याकांड मामले में पुलिस को अहम साक्ष्य मिले हैं। सूत्रों के मुताबिक हत्याकांड की पूरी जानकारी नैनी जेल में बंद अली को थी। गुलाम हसन सहित अन्य शूटर उससे मिलने के लिए कई बार जेल में गए थे। दो बार प्लान फेल हो जाने पर अली काफी नाराज था। उमेश पाल और उनके दो गनर की हत्या के मामले में दो दिन पहले आरोपी बनाए गए अतीक अहमद के बेटों उमर व अली के खिलाफ विवेचना में पुलिस को अहम साक्ष्य मिले हैं। पूर्व में जेल भेजे गए अभियुक्तों ने बयान में बताया है कि अतीक से फेसटाइम पर होने वाली हर मीटिंग के बाद एक-एक बात की जानकारी जेल जाकर अली को दी जाती थी। पूर्व में दो बार प्लानिंग फेल होने के चलते एक बार गुलाम समेत अन्य शूटरों को उसने यह कहते हुए उकसाया भी था कि इस बार उमेश पाल को नहीं मार पाए तो दोबारा मुंह मत दिखाना। सूत्रों के मुताबिक, हत्याकांड से पहले शूटर गुलाम, गुड्डू मुस्लिम व अरमान ने नैनी जेल में जाकर अली से पांच बार मुलाकात की थी। इस दौरान उनके साथ सदाकत भी था। सदाकत ने पूछताछ में पुलिस को जो बयान दिया है, उससे अली की संलिप्तता के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं। उसने पुलिस को बताया कि शूटर गुलाम, गुड्डू मुस्लिम व अरमान, असद की मौजूदगी में फेसटाइम से अतीक से मीटिंग करते थे। ऐसी ही एक मीटिंग मुस्लिम हॉस्टल के कमरा नंबर 36 में भी हुई थी जिसमें वह शामिल था।

अली से मिलने के लिए नैनी जेल में गए थे शूटर

इस मीटिंग के बाद भी गुलाम व अन्य शूटर उसे लेकर नैनी जेल में अली से मिलने पहुंचे थे और उसे एक-एक बात की जानकारी दी थी। इसके अलावा शाइस्ता के चकिया कसारी मसारी स्थित कमरे में होने वाली मीटिंग के बाद भी गुलाम व अन्य नैनी जेल में अली से मिलने गए थे। हत्याकांड से पहले आखिरी बार जेल में हुई मुलाकात में अली ने गुलाम व अन्य को उकसाया भी था। उसने इस बार कोई चूक होने पर दोबारा शक्ल न दिखाने की बात कही थी। इस बात को लेकर गुलाम बहुत आक्रोशित था और जेल से लौटते वक्त उसने यह भी कहा था कि इस बार किसी भी हालत में वह काम पूरा करके रहेगा।

'दीवानी–मस्तानी' की मुरीद हुई 'द अकेडमी'

एंटरटेनमेंट डेस्क। 3 अप्रैल को दुनिया भर में प्रतिष्ठित ऑस्कर अवॉर्ड के आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज 'द अकेडमी' ने दीपिका पादुकोण की फिल्म 'बाजीराव मस्तानी' के एक गाने के क्लिप को साझा किया है। बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण इन दिनों लाइम लाइट से दूर अपने परिवार के संग समय बिता रही हैं। जल्द ही अभिनेत्री मां बनने वाली हैं। इस साल जनवरी में वे 'फाइटर' फिल्म में ऋतिक रोशन के साथ एक्शन करती नजर आई थीं। दर्शकों को इस फिल्म में उनका किरदार काफी पसंद भी आया था। वहीं कल यानि 3 अप्रैल को दुनिया भर में प्रतिष्ठित ऑस्कर अवॉर्ड के आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज 'द अकेडमी' ने दीपिका पादुकोण की फिल्म 'बाजीराव मस्तानी' के एक गाने के क्लिप को साझा किया है।

'दीवानी–मस्तानी' की क्लिप 'द अकेडमी' पर

दीपिका पादुकोण सिर्फ बॉलीवुड ही नहीं बल्कि हॉलीवुड में भी अपनी पहचान बना चुकी हैं। विन डीजल से लेकर कई बड़े हॉलीवुड स्टार्स उनके अभिनय के मुरीद हैं। हाल ही में 'द अकडेमी' ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल से दीपिका की फिल्म 'बाजीराव–मस्तानी' के एक गाने की क्लिप को साझा करते हुए लिखा है, 'दीपिका पादुकोण 'दीवानी–मस्तानी' गाने पर परफॉर्म कर रही हैं। इस फिल्म का निर्देशन संजय लीला भंसाली ने किया है और इस गाने को श्रेया घोषाल ने गाया है। 'दीवानी–मस्तानी' उस साल के सर्वश्रेष्ठ गानों में से एक गाना था।

पति रणवीर हुए गौरवान्वित

दीपिका पादुकोण के गाने के क्लिप को साझा करते हुए 'द अकेडमी' ने आगे लिखा है, 'इस फिल्म में दीपिका पादुकोण के साथ प्रियंका चोपड़ा भी थीं।' दीपिका की इस उपलब्धि पर पति रणवीर सिंह ने अपनी खुशी जाहिर की है। रणवीर ने कमेंट सेक्शन में जाकर पत्नी दीपिका की तारीफ में लिखा है, 'मेस्मेरिक'। सोशल मीडिया पर दीपिका के फैंस भी 'द अकेडमी' की पोस्ट पर जा कर दीपिका पर खूब प्यार लूटा रहे हैं।

फैंस लूटा रहे हैं प्यार

दीपिका पदुकोण के चाहने वाले सिर्फ भारत ही नहीं हैं बल्कि दुनिया भर में उनके करोड़ों प्रशंसक हैं। सोशल मीडिया पर दीपिका के फैंस भी 'द अकेडमी' के कमेंट सेक्शन में जाकर अपनी खुशी जाहिर कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा है, 'इस गाने में दीपिका की खूबसूरती देखने लायक है।

मुझे नहीं लगता है कि कोई भी दूसरी अभिनेत्री इस गाने को यूं निभा पातीं।' वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा है, 'यह हिंदी सिनेमा में अब तक के सबसे महान गीतों में से एक के रूप में जाना जाएगा।'

एक दूसरे यूजर ने कहा है, 'अब तक के सबसे खूबसूरती से फिल्माए गए गाने को पहचानने के लिए धन्यवाद 'द अकेडमी' का धन्यवाद।'

सोशल मीडिया पर रील पोस्ट करने में शरमाती हैं किंग खान की लाडली सुहाना

एंटरटेनमेंट डेस्क। बॉलीवुड में जहां दोस्ती से ज्यादा दुश्मनी के चर्चे होते हैं वहीं कुछ दोस्ती ऐसी होती है जिसकी मिसाल लोग देते हैं। शाहरुख खान की लाडली सुहाना खान और चंकी पांडे की बेटी अनन्या पांडे की दोस्ती भी कुछ ऐसी ही है। बचपन की सहेलियां आज पक्की दोस्त बन चुकी हैं। कई मौकों पर दोनों को एक साथ स्पॉट भी किया जाता है। हाल ही में सुहाना खान ने इंस्टग्राम से अपनी कुछ तस्वीरों को साझा किया जिस पर अनन्या पांडे ने कमेंट किया है। इंटरनेट पर दोनों सहेलियों की बातें वायरल हो रही हैं।

सुहाना खान बॉलीवुड में 'द आर्चीज' से अपना डेब्यू कर चुकी हैं। नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई इस फिल्म में वे 'वेरोनिका' के किरदार में नजर आई थीं। फिल्मों में काम करने के अलावा सुहाना खान सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव हैं। वे अक्सर अपनी खूबसूरत तस्वीरें इंस्टाग्राम पर साझा करती रहती हैं। सुहाना खान ने हाल ही में फ्लोरल मिडी ड्रेस में अपनी प्यारी सी तस्वीर को साझा किया। सुहाना ने फोटो के कैप्शन में लिखा था, 'द ड्रेस'। अनन्या पांडे ने जैसे ही उस फोटो को देखा उन्होंने तुरंत कमेंट सेक्शन में जाकर लिखा, 'जो रील बनाया है उसे साझा करो'।

अनन्या पांडे के कमेंट के नीचे सुहाना खान ने उन्हें जवाब देते हुए लिखा, 'मुझे शर्म आ रही है, मैं नहीं उसे साझा कर सकती हूं।' दोनों सहेलियों की बातें अब इंटरनेट पर वायरल हो रही हैं। अनन्या के कमेंट के नीचे उनकी मां भावना पांडे ने भी एक दिल वाला इमोजी से कमेंट किया है। बचपन की सहेलियां सुहाना खान और अनन्या पांडे एक साथ जनवरी में पेरिस और फ्रांस गई थीं। जहां अनन्या ने पेरिस फैशन वीक 2024 के दौरान अंतरराष्ट्रीय रनवे पर पहली बार रैंप वॉक किया था। सुहाना खान ने उनकी खूबसूरत तस्वीरों को अपने अकाउंट से साझा करते हुए अनन्या का उत्साहवर्धन किया था।

मृणाल ठाकुर को है ब्रांड से परहेज कपड़ों पर खर्चतीं हैं महज इतने रुपये

एंटरटेनमेंट डेस्क। 'सीता रामम' और 'हाय नन्ना' जैसी फिल्मों में काम कर तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाने वालीं अभिनेत्री मृणाल ठाकुर अगली बार विजय देवरकोंडा के साथ 'फैमिली स्टार' में नजर आएंगी। मृणाल अपने बेबाक बयान को लेकर भी सुर्खियां बटोरती हैं। हाल ही में अभिनेत्री को इंडस्ट्री में होने वाले भेदभाव पर कटाक्ष करते देखा गया था। वहीं अब अभिनेत्री ने अपने आउटफिट पर खर्च किए जाने वाले पैसों का खुलासा कर हर किसी को हैरान कर दिया है। अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने कहा कि उनका मानना है कि कपड़े खरीदना पूरी तरह से पैसे की बर्बादी है और उन्होंने कभी भी आउटफिट पर दो हजार रुपये से ज्यादा खर्च नहीं किए हैं। एक इंटरव्यू के दौरान मृणाल ने खुलासा किया कि वह महंगे डिजाइनर कपड़ों पर पैसे खर्च नहीं करती हैं क्योंकि कोई उन्हें दोबारा नहीं पहनता है। इंटरव्यू के दौरान मृणाल ने अपनी पहनी हुई ड्रेस पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'ये मेरे कपड़े नहीं हैं। मैं एक टॉप पर अधिकतम 2000 रुपये खर्च करती हूं। मुझे लगता है कि यह भी बहुत ज्यादा है।' उन्होंने आगे कहा, 'क्योंकि जो भी चीज महंगी होती हैं, आप उसे बार–बार नहीं पहन सकते। हां, आपके वॉर्डरोब में एक क्लासिक स्टेटमेंट कलेक्शन रखना अच्छी बात है लेकिन इसके लिए एक ब्रांड पहनना पैसे की बर्बादी है।'

मृणाल ठाकुर ने अपनी बात में आगे जोड़ा, 'मैं उन पैसों को भोजन, कुछ पौधों, घर या ऐसी जमीन पर निवेश करना चाहूंगी जहां मैं खेती कर सकूं। अगर मेरी अलमारी में 1000 चीजें हैं तो उनमें से पांच चीजें स्टेटमेंट चीजें होंगी।' अभिनेत्री ने आगे कहा कि वह स्टाइलिश रहने और महंगे कपड़ों पर खर्च करने से बचने के बीच संतुलन बनाकर चलती हैं। मृणाल ठाकुर ने लोगों को सुझाव देते हुए कहा, 'आपको स्मार्ट होना होगा और आप ऐसी किसी भी चीज में निवेश नहीं कर सकते जो चलन में है।

यह चलन सिर्फ छह महीने, एक साल तक रहेगा और चला गया।' काम के मोर्चे पर मृणाल ठाकुर की आगामी फिल्म 'फैमिली स्टार' 5 अप्रैल, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है।

फेमिली ड्रामा के बीच देखने को मिलेगा रोमांटिक मोमेंट

नई दिल्ली। 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में एक्शन पैक्ड ड्रामा देखने को मिलने वाला है. इसमें आपको इमोशन से लेकर रोमांस तक हर मसाले का तड़का देखने को मिलेगा. अभिरा (समृद्धि शुक्ला) कृष का पर्दा फाश करेगी. अभिरा बताएगी कि कृष हैंडिकैप होने का नाटक कर रहा है. वह ऐसा अपने पिता संजय के खिलाफ प्रोटेस्ट करने के लिए कर रहा है. अभिरा एक गाना चलाएगी और गाना सुनते ही वो भूल जाएगा और डांस करने के लिए उठेगा. बस इसी के साथ सबके सामने होगा कि कृष नाटक कर रहा है. अरमान (रोहित पोद्दार) को कृष पर गुस्सा आ जाएगा. अभिरा उसे कहती है कि इसे सीक्रेट रखे. वह चाहती है कि परिवार को अहसास हो कि कृष का असली पैशन डांस है।

क्या अरमान और अभिरा के बीच होगी किस

ऐसा लग रहा है कि अरमान और अभिरा कृष का पैशन परिवार के सामने लाने के लिए एक प्लान बना रहे हैं. इनौगरेशन के दौरान कृष राजस्थानी डांसर की तरह तैयार होकर आएगा और एक शानदार परफश्नमेंस देगा. अभिरा ढोल बजाएगा और सब देखते रह जाएंगे. पोद्दार और गोएंका परिवार वाले देखते ही रह जाएंगे. हो सकता है कि कावेरी और संजय कृष को डांस में आगे बढ़ने की इजाजत दे दें. अरमान अभिरा के इस प्लान से बहुत इंप्रेस होगा और उसके माथे पर किस करेगा. इस सीन के साथ शो में रोमांस की शुरुआत होगी।

ये रिश्ता क्या कहलाता है में होगी नई एंट्री

इस शो में मृणाल जैन की एंट्री होने वाली है. उनकी एंट्री अक्षरा की बर्थडे पार्टी के मौके पर होगी. वह अभीर का रोल निभाएंहे. इनकी एंट्री के बाद रूही और अभिरा की जींदगी पूरी तरह बदल जाएगा।

अभिरा और अरमान के बीच होगा पहला किसिंग सीन

हार की हैट्रिक लगाने वाली मुंबई इंडियंस के लिए आई खुशखबरी, टीम में लौटेगा दुनिया का नंबर एक बल्लेबाज

स्पोर्ट्स डेस्क। हार की हैट्रिक लगाने वाली मुंबई इंडियंस की टीम के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। दुनिया के नंबर एक टी20 बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव की वापसी की तारीख सामने आ गई है। उन्हें नेशनल क्रिकेट एकेडमी ने फिट घोषित कर दिया है और वह जल्द ही इस सीजन अपना पहला मैच खेलते दिखेंगे। सूर्या ने एनसीए में लगभग हर तरह के फिटनेस टेस्ट को पास किया। उनकी वापसी से मुंबई की बल्लेबाजी को मजबूती मिलेगी, जो अब तक एक मैच (सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ) को छोड़कर किसी मैच में नहीं चल पाई है।

सूर्यकुमार पिछले साल दक्षिण अफ्रीकी दौरे पर टी20 सीरीज के दौरान चोट लगी थी। इसके बाद उनकी कई सर्जरी हुई थीं। इनमें एक ग्रेड दो के टखने की चोट के लिए और दूसरी स्पोर्ट्स हर्निया के लिए।

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ सूत्र ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से कहा, 'सूर्या ने एक नियमित टेस्ट को छोड़कर बाकी सभी टेस्ट पास कर लिए हैं, जो एनसीए से आरटीपी (रिटर्न टू प्ले) सर्टिफिकेट पाने के लिए अनिवार्य हैं। गुरुवार को एक और टेस्ट होना बाकी है, जिसके बाद स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी।'

सूर्या को बल्लेबाजी में नही हो रही परेशानी

सूत्र ने कहा, 'वह आराम से बल्लेबाजी कर रहे हैं और सभी सिमुलेशन कर चुके हैं।' यह पूछे जाने पर कि क्या सूर्यकुमार सात अप्रैल को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुंबई इंडियंस का घरेलू मैच खेल पाएंगे? सूत्र ने कहा– गुरुवार के परीक्षणों के बाद स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी। अगले गेम से पहले अभी भी तीन दिन हैं, लेकिन चूंकि वह काफी लंबे समय बाद वापसी कर रहे हैं इसलिए सावधानी बरती जाएगी। वह 11 अप्रैल को आरसीबी के खिलाफ घरेलू मैदान पर भी वापसी कर सकते हैं।'

सूर्या की वापसी से मुंबई को मिलेगी मजबूती

यह धाकड़ बल्लेबाज पिछले चार से पांच सीजन में एमआई के लिए सबसे शानदार प्रदर्शन करने वाला खिलाड़ी रहा है और इस सीजन में अपने पहले तीन मैच हारने वाली मुंबई टीम को प्लेइंग इलेवन में उनकी कमी महसूस हुई है। उनके स्थान पर आए पंजाब के खिलाड़ी नमन धीर अभी तक लय में नहीं दिखे हैं और कप्तान हार्दिक पंड्या को हार से उबरने के लिए 'मिस्टर 360 डिग्री' की जरूरत होगी।

बीसीसीआई ने सूर्या का रखा ध्यान

बीसीसीआई की मेडिकल टीम चाहती थी कि सूर्यकुमार संयुक्त राज्य अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप के लिए पूरी तरह से फिट रहें। साथ ही यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि आईपीएल में वापसी करने में वह जल्दबाजी न कर बैठें। सूर्या ने आईपीएल में 139 मैच की 124 पारी में 31.85 की औसत और 143.32 के स्ट्राइक रेट से 3249 रन बनाए हैं। इनमें एक शतक और 21 अर्धशतक शामिल हैं।

बांग्लादेश के खिलाफ श्रीलंका की जीत से टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में बड़ा बदलाव

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 अंक तालिका

स्थान	टीम	मैच	जीते	हारे	ड्रा	अंक	अंक प्रतिशत
1	भारत	9	6	2	1	74	68.51
2	ऑस्ट्रेलिया	12	8	3	1	90	62.50
3	न्यूजीलैंड	6	3	3	0	36	50.00
4	श्रीलंका	4	2	2	0	24	50.00
5	पाकिस्तान	5	2	3	0	22	36.66
6	वेस्टइंडीज	4	1	2	1	16	33.33
7	दक्षिण अफ्रीका	4	1	3	0	12	25.00
8	बांग्लादेश	4	1	3	0	12	25.00
9	इंग्लैंड	10	3	6	1	21	17.50

स्पोर्ट्स डेस्क। श्रीलंका इस जीत के साथ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गई है। इससे पहले टीम 33.33 अंक प्रतिशत के साथ छठे स्थान पर थी। दूसरे मैच में जीत के साथ टीम ने पाकिस्तान को पीछे छोड़ दिया। श्रीलंका का अंक प्रतिशत 50 का हो गया है। वहीं, पाकिस्तान 36.66 के अंक प्रतिशत के साथ पांचवें स्थान पर खिसक गया है।

श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच खेली गई दो मैचों की टेस्ट सीरीज बुधवार को खत्म हो गई। श्रीलंका ने मेजबानों के खिलाफ 2–0 से जीत हासिल कर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में बड़ा बदलाव किया। इससे पाकिस्तान को तगड़ा नुकसान हुआ है जबकि भारत की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा। श्रीलंका ने दूसरे टेस्ट मैच को पांचवें दिन 192 रन से जीत लिया। इससे पहले टीम ने पहला मुकाबला 328 रन से जीता था।

श्रीलंका को हुआ फायदा, पाकिस्तान को नुकसान

श्रीलंका इस जीत के साथ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गई है। इससे पहले टीम 33.33 अंक प्रतिशत के साथ छठे स्थान पर थी। दूसरे मैच में जीत के साथ टीम ने पाकिस्तान को पीछे छोड़ दिया। श्रीलंका का अंक प्रतिशत 50 का हो गया है। वहीं, पाकिस्तान 36.66 के अंक प्रतिशत के साथ पांचवें स्थान पर खिसक गया है। श्रीलंका ने चार मैचों में से दो मुकाबलों में जीत दर्ज की। वहीं, पाकिस्तान ने पांच मैच खेले जिसमें उसे दो में जीत मिली।

भारत शीर्ष पर काबिज

श्रीलंका की जीत से भारत को कोई नुकसान नहीं हुआ है। भारत नौ मैचों में छह जीत के साथ शीर्ष पर बना हुआ है। टीम इंडिया का अंक प्रतिशत 68.51 का है। दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया है जिसका अंक प्रतिशत 62.50 का है। वहीं, तीसरे स्थान पर छह मैचों में तीन जीत के साथ न्यूजीलैंड है जिसका अंक प्रतिशत 50 का है। वहीं, वेस्टइंडीज की टीम पांचवें स्थान से छठे पायदान पर पहुंच गई है। वहीं, बांग्लादश की टीम सातवें स्थान से खिसक कर आठवें पायदान पर पहुंच गई है। उसका अंक प्रतिशत 25 है।

ईशांत की यार्कर पर चारों खाने चित हुए रसेल

स्पोर्ट्स डेस्क। कोलकाता नाइट राइडर्स ने आईपीएल 2024 के 16वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स को 106 रन से हरा दिया है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए कोलकाता ने 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 272 रन बनाए थे। जवाब में दिल्ली की टीम 17.2 ओवर में 166 रन पर सिमट गई। यह दिल्ली की चार मैचों में तीसरी हार है। वहीं, कोलकाता ने जीत की हैट्रिक लगाई है। दिल्ली कैपिटल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच बुधवार की शाम आईपीएल 2024 का 16वां मुकाबला खेला गया। इसमें ईशांत शर्मा को दिल्ली के लिए घातक गेंदबाजी करते देखा गया। उन्होंने अपनी खतरनाक यॉर्कर से आंद्रे रसेल को चारों खाने चित कर दिया। वह मैदान पर मुंह के बल गिर पड़े। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए कोलकाता ने दमदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 20 ओवर में सात विकेट खोकर 272 रन का स्कोर तैयार किया, जो आईपीएल के इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। वहीं, इससे पहले मुंबई इंडियंस और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच खेले गए मैच में पैट कमिंस की टीम ने 277 रन का विशाल स्कोर तैयार किया था।

ईशांत की यार्कर पर बिगड़ा रसेल का संतुलन

कोलकाता की पारी का 20वां ओवर ईशांत शर्मा ने किया। इस दौरान उन्होंने घातक गेंदबाजी की। ओवर की पहली गेंद यॉर्कर फेंकी जिस पर रसेल अपना संतुलन खो बैठे और मैदान पर चारों खाने चित होकर गिर पड़े। उन्होंने यह गेंद बिल्कुल भी समझ नहीं आई और वह आउट हो गए। इसके बाद वेस्टइंडीज के स्टार बल्लेबाज उठे और बल्ले से ताली मारकर खुद इस गेंद की तारीफ की। उन्होंने 19 गेंद में चार चौके और तीन छक्के की मदद से 41 रन बनाए। इस ओवर की तीसरी गेंद पर इशांत ने रमनदीप को चलता किया। वह दो रन बना सके।

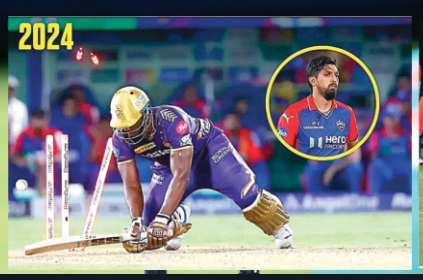

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो. नं. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।

विराट 10वीं बार लीग में किसी गेंदबाज के पहले शिकार बने

स्पोर्ट्स डेस्क। लखनऊ के सिद्धार्थ के खिलाफ आउट होते ही विराट ने एक अनचाहा रिकॉर्ड अपने नाम किया। वह आईपीएल में 10वीं बार किसी गेंदबाज के इस लीग में पहले शिकार के रूप में आउट हुए। आईपीएल 2024 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का खराब प्रदर्शन जारी है। टीम इस सीजन अब तक अपने चार में से तीन मैच गंवा चुकी है। इस सत्र का पहला मुकाबला चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ गंवाने के बाद टीम ने पंजाब किंग्स के खिलाफ वापसी करते हुए मुकाबला चार विकेट से जीता था। हालांकि, इसके बाद आरसीबी की टीम कोलकाता और लखनऊ के खिलाफ अपने घर में लगातार दो मैच हार गई। इससे अंक तालिका में यह टीम नौवें स्थान पर पहुंच गई। विराट कोहली को छोड़कर इस टीम की बल्लेबाजी लगभग फ्लॉप रही है। सिर्फ विराट के ही रन थ्री फिगर में हैं। बाकी सभी बल्लेबाजों के रन 100 से कम ही हैं। हाल ही में अंबाती रायुडू ने अपने एक बयान से सभी को चौंका दिया था। उन्होंने आरसीबी की हार के लिए विराट को जिम्मेदार ठहराया था। मंगलवार को लखनऊ के खिलाफ भी वह 16 गेंद में दो चौके और एक छक्के की मदद से 22 रन की पारी खेली।

कोलकाता ने दर्ज की लगातार तीसरी जीत

कोलकाता नाइट राइडर्स ने आईपीएल 2024 के 16वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स को 106 रन से हरा दिया है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए कोलकाता ने 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 272 रन बनाए थे। जवाब में दिल्ली की टीम 17.2 ओवर में 166 रन पर सिमट गई। यह दिल्ली की चार मैचों में तीसरी हार है। वहीं, कोलकाता ने जीत की हैट्रिक लगाई है। टीम ने अब तक अपने सभी तीनों मुकाबले जीते हैं।

अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंची केकेआर

इस जीत के साथ कोलकाता की टीम छह अंकों के साथ शीर्ष पर पहुंच गई है। वहीं, दिल्ली की टीम नौवें स्थान पर पहुंच गई है। उसके दो अंक हैं। कोलकाता को अगला मैच आठ अप्रैल को चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ चेन्नई में खेलना है। वहीं, दिल्ली की टीम अपना अगला मैच सात अप्रैल को मुंबई इंडियंस के खिलाफ वानखेड़े में खेलेगी।